मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

वर्ष-२ अंक-११

माह : मई २०२०

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान
मिशन शिक्षण संवाद
शिक्षक का सम्मान

मिशन की ऑनलाइन परीक्षा- २०२०

मिशन शिक्षण संवाद

से भी आगे..

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-११

माह- मई २०२०

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक
प्रांजल सक्सेना
आनन्द मिश्र

सह सम्पादक
डॉ० अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

हमने क्या सीखा है और सीखा हुआ हमारे किस काम का है इसकी असली पहचान तब होती है जब समस्याओं की कसौटी पर ज्ञान को परखा जाता है। वर्तमान समय संघर्ष का समय है। अब इस संघर्ष को हम कैसे करते हैं? कैसे इस समस्या से निपटते हैं? यह हमारी अब तक की शिक्षा पर निर्भर करता है। इसलिए आज के दौर में आवश्यक है कि शिक्षा ऐसी हो जो बालक को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने में सहायता करे।

मिशन शिक्षण संवाद का मंच शिक्षा के क्षेत्र का एक बहुपयोगी मंच है। यहाँ शिक्षकों से लेकर बच्चों तक के लिए बहुत कुछ है। लॉकडाउन में तो गृहकार्य के क्षेत्र में एक नया ही इतिहास रच दिया है। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च प्राथमिक स्तर तक नवीन एवं सहज शिक्षण सामग्री उपलब्ध रही। ऑनलाइन परीक्षा में लगभग 60000 विद्यार्थियों का प्रतिभाग करना एक बड़ी उपलब्धि थी। बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मकता से भरा हुआ वातावरण तैयार करने में इस मंच की एक बड़ी भूमिका रही है।

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रतिमाह एक शैक्षिक पत्रिका का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण कदम है। इस पत्रिका के स्तम्भ ऐसे हैं जो सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। मैं पत्रिका के आगामी अंक हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

खण्ड शिक्षा अधिकारी
कड़ा-कौशाम्बी

अरविंद कुमार पांडेय
खण्ड शिक्षा अधिकारी,
कड़ा, कौशाम्बी।

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

मनुष्य का जीवन एक यात्रा की भाँति है जहाँ हमें विभिन्न बाधाओं, परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन जब एक ही मंजिल पर पहुँचने को आतुर कुछ साथी मिल जाएँ तो रास्ता आसान हो जाता है। यदि ये साथी एक दूसरे के सहयोगी के रूप में हाथ पकड़कर चलने लगें तो रास्ता और भी अधिक आसान हो जाता है तथा जब यही साथी एक–दूसरे से संवाद करते हुए, एक–दूसरे का मार्गदर्शन करते हुए, एक–दूसरे से सीखते हुए आगे बढ़ते हैं तो मार्ग की कठिनाइयाँ छूमंतर हो जाती हैं।

मिशन शिक्षण संवाद एक ऐसी ही यात्रा है जिसमें शिक्षा के उत्थान और शिक्षा के सम्मान के लिए हजारों शिक्षक एक–दूसरे का हाथ थामकर बढ़े चले जा रहे हैं। अनमोल रत्न से आरम्भ हुई ये यात्रा आज तकनीक के सहारे से नित नवीन ऊँचाइयाँ छू रही है। लॉकडाउन की इस विषम परिस्थिति में भी पहले प्रतिदिन नियमित रूप से गृहकार्य का जाना और फिर लगभग 60000 विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन परीक्षा में सम्मिलित होने से बेसिक शिक्षा में नवीन इतिहास ही रच गया। मिशन शिक्षण संवाद यूँ ही नवीन आयाम स्थापित करता रहेगा। बस आवश्यकता है तो आपके सहयोग और विश्वास की। आपके इसी सहयोगात्मक प्रेम और विश्वास से हम आशा करते हैं कि आप हमेशा की तरह जीवन के व्यस्तम समय से थोड़ा समय मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद को भी देते रहेंगे। क्योंकि सकारात्मकता से भरी इस पत्रिका में अनेकानेक शैक्षिक स्तम्भ हैं। जो आपके लिए भी उपयोगी साबित होने वाले हैं। आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा के साथ मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका ''शिक्षण संवाद'' का मई – 2020 अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	1
अनमोल रत्न	2–3
अनमोल बाल रत्न	4
शिक्षक और ऑनलाइन शिक्षण	5–6
विचारशक्ति–1	7–8
विचारशक्ति–2	9–10
विचारशक्ति–3	11–12
विचारशक्ति–4	13–14
विचारशक्ति–5	15–16
कस्तूरबा विद्यालय	17–18
बात महिला शिक्षकों की	19
बाल कविता	20
टी.एल.एम.संसार	21
नवाचार	22
गतिविधि	23
English Medium Diary-1	25–25
English Medium Diary-2	26–27
प्रेरक प्रसंग–1	28–29
प्रेरक प्रसंग–2	30
बाल कहानी	31–33
बाल फिल्म	34–35
बाल कविता	36
कविता शिक्षण	37
सदविचार	38–39
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	40
खेल विशेष	41–42
योग–विशेष	43–44
मिशन हलचल	45–46
शिक्षण तकनीकी	47

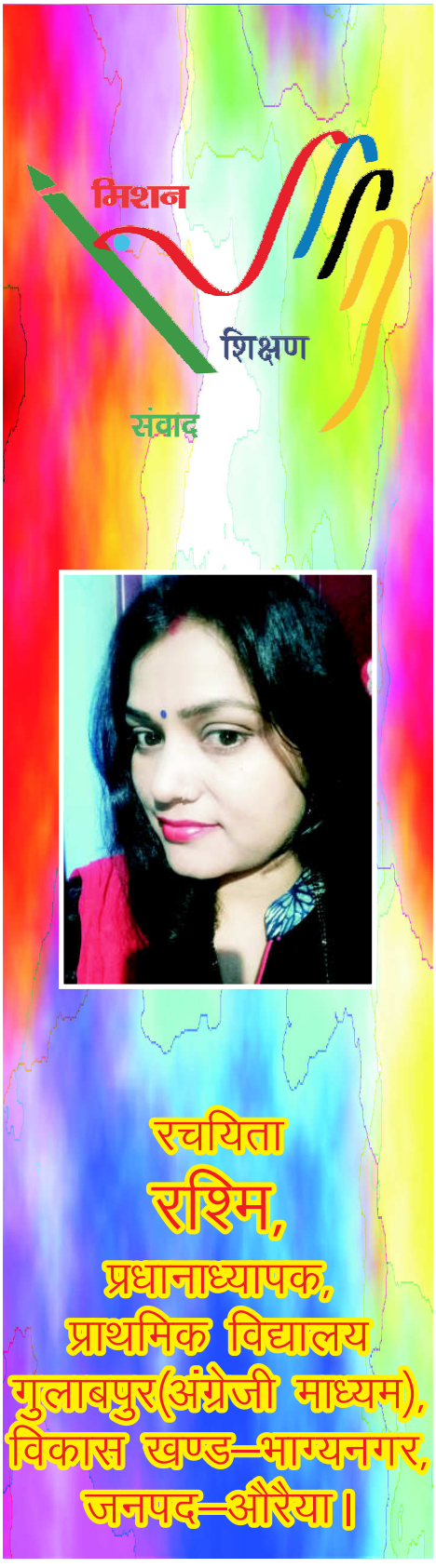

प्यारे से मिशन

प्यारे से मिशन ने ऐसा काम किया,
वाह – वाह बोले मतवाला जिया
तारीफ सुनकर डोले हिया, डोले हिया
ओ.. प्यारे से .....

1–पहले किताब से ही पढ़ते थे बच्चे
लिए थे वो बोझ वाला बस्ता,
खेल में सिखाके, गतिविधि कराके
इसने दिखाई नई रस्ता।
शिक्षा का स्तर ऊँचा किया, ऊँचा किया
ओ... प्यारे से...

2–खस्ता हाल, परिवेश बेहाल
रहे बड़ी उलझन मेरे मन में,
अब स्कूल चमके, दम दम दमके
और फूल मुस्काये प्रांगण में
पाठशाला को नया रूप दिया, रूप दिया
ओ... प्यारे से....

3–बेहतर ज्ञान हो, सबका सम्मान हो
करके दिखाएँगे ये जग में,
लक्ष्य बनाएँगे, सबको ले जाएँगे
रह नहीं जाए कोई मग में।
सबने मिलकर प्रण है लिया, प्रण लिया
ओ...प्यारे से.....

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

माह के अनमोल रत्नों को नमन

४१६ रंजना निरंजन इंचार्ज प्रधानाध्यापक प्रा0 वि0 भगवानपुर, बर्डपुर सिद्धार्थनगर, उ0प्र0
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/03/blog-post_819.html

४२० नाथूराम कुशवाहा, प्र०अ० प्रा0 वि0 सिंगलामऊ विख–भाग्यनगर, जनपद–औरैया
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/03/blog-post_976.html

४२१ अशोक कुमार गुप्ता प्रा0 वि0 मुरका, ब्लॉकरू मऊ, जनपदरू चित्रकूट, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/03/blog-post_698.html

४२२ विकास मलिक पूर्व माध्यमिक वि0 इदरीशपुर ब्लॉक–बिनोली, जनपद–बागपत उ0 प्र0
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/03/blog-post_219.html

४२३ रवि कुमार सिंह (प्र0अ0) इंग्लिश मी0 प्रा0 वि0 बम्भिया, मानिकपुर, चित्रकूट, उ0 प्र0
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/03/blog-post_398.html

४२४ इन्दु पंवार (प्र०अ०) राजकीय प्रा0 वि0 गिरगांव, पौड़ी, गढ़वाल, उत्तराखंड
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_46.html

४२५ रूपम सक्सैना (स०अ०) प्रा०वि० दरिगपुर, ब्लॉक– शीतलपुर जनपद– एटा, उ0 प्र0
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_97.html

४२६ अनुराधा पांडे (प्र0अ0) प्रा0 वि0 अमिरसा (अंग्रेजी माध्यम), नेवादा, जनपद– कौशाम्बी
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_30.html

४२७ दीपक कुमार गुप्ता (स०अ०) इंग्लिश मी0, प्रा0 वि0 समायन, ऐरवाकटरा, औरैया
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_96.html

४२८ बंशी लाल (प्रधानाध्यापक) प्रा०वि० घरवासीपुर, वि०खं०– धाता, फतेहपुर (उ०प्र०)
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_79.html

४२९ सचिन सक्सेना (इ०प्र०अ०) उ0 प्रा0 वि0 सिंगरौरा, सालारपुर, जिला– बदायूं, उ0प्र0
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_50.html

४३० रेखा शर्मा स0 अ0, पूर्व माध्यमिक विद्यालय सैदूपुर कुर्मियान, बिथरी चौनपुर, बरेली
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_363.html

४३१ बिम्बसार बौद्ध (स.अ.) प्राथमिक विद्यालय दहेलिया, जैथरा, एटा, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_601.html

४३२ अशर्फी लाल सिंह (प्र०अ०) पूर्व मा0 वि0, कोल गदहिया, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश
Https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_661.html

अनमोल बाल रत्न

200 मीटर रेस विजेता

नाम - राधिका देवी

जन्म तिथि
15–11–2009

गाँव मनौटी

पिता – श्री जगतपाल
माता – श्रीमती अनीता

उपलब्धि – 200 मीटर बालिका वर्ग रेस में प्रयागराज मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मेडल जीता।

सुमन पांडेय,
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय टिकरी मनौटी,
शिक्षा क्षेत्र–खजुहा,
जनपद–फतेहपुर।

शिक्षक और ऑनलाइन शिक्षण

शिक्षण संवाद

वैश्विक महामारी **covid**–19 ने जहाँ समूचे विश्व को अस्त–व्यस्त कर दिया, वहीं समस्त जनमानस के दिनचर्या और कार्यों को प्रभावित कर परिवर्तित कर दिया। इन्हीं परिवर्तनों में एक परिवर्तन शैक्षणिक क्षेत्र में भी हुआ। ई लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षण का प्रारम्भ।

अब इस प्रकार का शिक्षण सकारात्मक है या नकारात्मक प्रभाव डालता है यह एक विस्तृत चर्चा का विषय बन गया है। यूँ तो ई लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षण अपेक्षात आसान, सर्वसुलभ, नवीन तकनीक को प्रेरित करने वाला और सम्भावना व अवसर प्रदान करने वाला है। साथ ही शिक्षकों व छात्रों को तकनीकी रूप से अद्यतन करने में भी सहायक है।

शहरी निजी विद्यालयों के छात्रों व शिक्षकों के लिए ऑनलाइन शिक्षण अपेक्षाकृत सरलता से क्रियान्वित करने योग्य है। इसका कारण भी सर्वविदित है, अभिभावकों का जागरूक होना, टेक्नोलॉजी फ्रेंडली होना, साथ ही प्रयुक्त व आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता तथा संचालन की जानकारी होना।

इसके ठीक विपरीत ग्रामीण अंचल के शिक्षकों व छात्रों के लिए ये एक चुनौती से कम नहीं। एक तरफ ऑनलाइन शिक्षण पूरी तरह तकनीक आधारित है तो वहीं दूसरी तरफ ग्रामीण अंचल में ऑनलाइन शिक्षण हेतु आवश्यक व प्रयोग में लाये जाने वाले एंड्राइड फोन व इंटरनेट की उपलब्धता सभी के पास नहीं। जहाँ है भी वहाँ अभिभावकों का ससमय बच्चे के साथ उपस्थित न होना और तकनीकी रूप से अप्रशिक्षित होना भी बड़ी समस्या है।

इतनी समस्याओं और चुनौतियों को भी बेसिक शिक्षा परिषद के शिक्षकों ने सहर्ष स्वीकार किया और अपना बेहतर व शत–प्रतिशत देने को तत्पर हैं। यह एक अत्यंत सराहनीय और स्वागत योग्य कदम है। कुछ नहीं से कुछ सही... और हार न मानने की सोच के साथ कुछ शिक्षकों ने बच्चों के लिए ऑनलाइन कंटेंट, रीडिंग मैटेरिअल, अभ्यास प्रश्न, वर्कशीट और वीडियो का निर्माण कर अपनी नवाचारी सोच के साथ ऑनलाइन शिक्षण की ओर अपने कदम निर्भीकता से बढ़ा दिए। हमारे ही समाज के कुछ लोगों को अवश्य यह दिखावा सरीखा लग सकता है, किन्तु ऐसे

प्रयास कोई साधारण नहीं। वास्तव में ऑनलाइन शिक्षण, ऑफलाइन शिक्षण से कहीं अधिक कठिन है। साथ ही बच्चों की कॉपियों का मूल्यांकन और हर अगले दिन की रणनीति तैयार करना भी आसान नहीं।

इतने असाधारण कार्यों के बीच यह भी एक सत्य है कि ऑनलाइन शिक्षण पारम्परिक कक्षा शिक्षण का विकल्प तो हो सकता है और शायद वर्तमान विपरीत परिस्थिति में समय की माँग के साथ आवश्यक भी। किन्तु इसके दीर्घकालिक प्रयोग के परिणाम भी छात्रों में शारीरिक व मानसिक समस्या उत्पन्न कर सकते हैं।

अतः ई लर्निंग व ऑनलाइन शिक्षण के प्रयोग के लिए एक शोध आधारित निश्चित रणनीति बनानी होगी। इसे कब तक कितना प्रयोग करें इसकी समयसीमा की भी निश्चितता आवश्यक है। अभिभावकों को तकनीक के प्रयोग के लिए जागरूक करने की बात होनी चाहिए। पाठ्यक्रम की किन विषय वस्तु को किस प्रकार इसके साथ जोड़ना है इस पर भी एक सूचीबद्ध निर्धारण होना आवश्यक है। ऑनलाइन शिक्षण ग्रामीण अंचल में हर बच्चे तक सर्वसुलभ हो। इसके लिए विशेषज्ञों व शिक्षकों को मिलकर कार्य करना होगा तभी हर बच्चा आधुनिक युग के आधुनिक शिक्षण के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकेगा।

श्वेता सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सिकटौर,
विकास खण्ड–खोराबार,
जनपद–गोरखपुर।

विचारशक्ति

विचारों का महत्व

शिक्षण संवाद

विचार ही सृष्टि में लोगों के सक्रिय और गतिमान बने रहने का आधार होते हैं। इस सृष्टि में जो भी घटित होता है उसका आधार कोई न कोई विचार ही है। यह विचार सकारात्मक और नकारात्मक दोनो प्रकार के होते हैं इसलिए संसार मे दोनो प्रकार की चीजें घटित होती रहती हैं। विचार ही आपको पाप करने को प्रेरित करते हैं और विचार ही आपको पुण्य करने को प्रेरित करते हैं। विचार ही युद्ध का कारण बनते हैं और विचार ही युद्ध के समाप्त होने का माध्यम भी।

सभी मनुष्यो के मन मे दोनो प्रकार के विचारों का जन्म होता है पर मजबूत आत्मिक मनोबल सकारात्मक विचारों को आगे बढ़ाने में मददगार होते हैं। वहीं कमजोर मन स्वलाभ की कामना से कभी–कभी नकारात्मक विचारों को स्वीकार कर लेते हैं। विचारों में सकारात्मकता कैसे बने इसके लिए प्रत्येक मनुष्य को स्वचिन्तन आवश्यक होता है। मनुष्य अपने आहार पर नियंत्रण करके, योग और ध्यान को अपनाकर तथा अच्छे विचार वाले व्यक्तियों की संगत करके अपने विचारों में समाज उपयोगी सकारात्मकता को बड़ा सकता है।

शिक्षा में सुधार की कामना से बड़े भाई विमल जी के मन मे भी कभी एक सकारात्मक विचार का जन्म हुआ होगा जिससे मिशन शिक्षण संवाद की परिकल्पना का जन्म हुआ। सकारात्मक और समान सोच के शिक्षकों ने इस विचार का स्वागत किया और वह इसमें जुड़ते गए। आज हजारों साथियों का यह परिवार उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु पूरे देश मे शिक्षा के लिए प्रयास करने वाला सबसे बड़ा मंच है। विचार कोई भी हो मंच का निर्माण तो हो ही जाता है क्योंकि संसार में हर विचार के समर्थक मिलते हैं। नफरत फैलाने वाले, शोषण करने वाले, अन्याय करने वाले, बेईमानी करने वाले लोगों के पास भी भीड़ होती है या यूँ कहें कि इनसे जुड़कर स्वहित साधने वालों की संख्या, समाज का भला करने वाले और परोपकार की चाह रखने वालों से ज्यादा होती है। पर अगर विचार में समाज के अंतिम गरीब वंचित शोषित समाज के उत्थान की

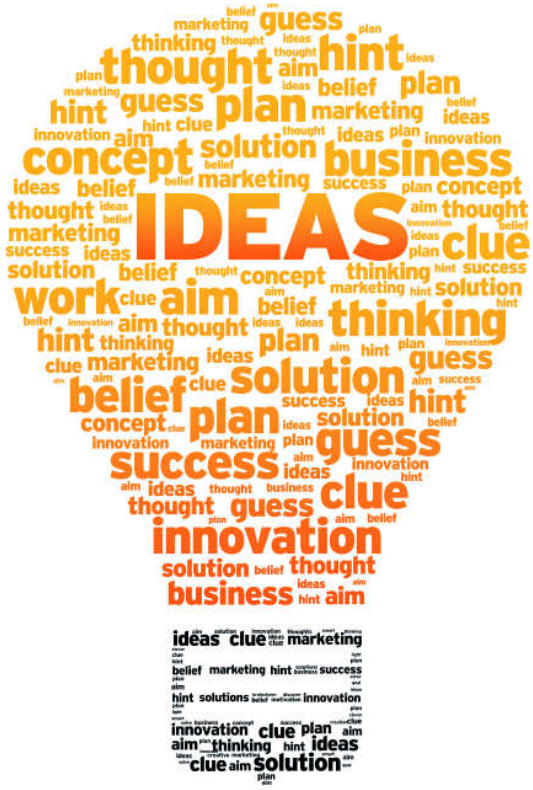

परिकल्पना न हो तो वह समाज उपयोगी नहीं रहता और अच्छे समाज के निर्माण में बाधा उत्पन्न होती है। सरकारी शिक्षा में, अध्ययनरत वर्ग में शोषित और वंचित समाज के छात्रों की संख्या सर्वाधिक है। ऐसे में इन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और नैतिक मूल्यों की शिक्षा के द्वारा समाज की मुख्यधारा में लाया जा सकता है। इनकी शिक्षा से समाज में कई तरह की कुरीतियों, विकृतियों और विषमताओं को भी खत्म किया जा सकता है। पर सरकारी प्रयासों का परिणाम तभी आ सकता है जब समस्त शिक्षकों के मन मे शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण हो, उनके मन मे सकारात्मक विचारों का प्रादुर्भाव हो और वो शिक्षा को मात्र नौकरी न मानकर अपना सामाजिक कर्तव्य मान लें। मिशन शिक्षण संवाद लगातार अपने साथियों की मदद से इस हेतु संवाद करता रहता है। आप सब इस मंच से जुड़े हैं इसलिए यह माना जा सकता है कि कहीं न कहीं आपके मन मे शिक्षा के प्रति सकारात्मक भाव है। इस परिवार में अधिक से अधिक लोग जुड़ें ताकि हम सब अपने सकारात्मक विचारों को एक दूसरे से साझा करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक माहौल निर्मित करते हुए और शैक्षिक गतिविधि साझा कर सकें। साथ ही अपने शिक्षण, विद्यालयी गतिविधियों, कार्यों और प्रयोगों से अपने छात्रों और उनके माता–पिता के साथ समाज का विश्वास जीत सकें। अगर हम ऐसा कर पाए तो मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा और समाज को एक नई दिशा मिल सकेगी।

सादर।
अवनीन्द्र सिंह जादौन
संयोजक मिशन शिक्षण संवाद
उत्तर प्रदेश

विचारशक्ति

शिक्षा में नवाचार की जरुरत क्यों है?

शिक्षण संवाद

शिक्षा जिसे अधिगम भी कहते है....और अधिगम का मतलब होता है सीखना। व्यक्ति हो चाहे पशु या पक्षी सभी के लिए सीखना जीवनपर्यन्त सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है, जिसे मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में अपनाता है। या यूँ कहें कि व्यक्ति जब तक जीवन की डोर से बँधा है उसका सीखना अविरल रूप से चलता रहता है। फिर वो चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो..... औपचारिक भी हो सकता है और अनौपचारिक भी। व्यक्ति का सीखना, सिखाना किसी उम्र या क्षेत्र का मोहताज नहीं है। वो बचपन में दूध पीना सिखाने से लेकर, बैठना, चलना, बोलना सीखता है फिर विद्यालय जाना सीखता है। विद्यालय में साथियों और शिक्षकों के संपर्क में आकर जीवन के विभिन्न आयाम व गुर सीखता है। फिर तकनीकी जीवन के अगले पड़ाव में व्यापार, उद्यम व आजिविका के साधन जुटाने के गुर सीखता है। चाहे व्यक्ति बूढ़ा भी हो जाए तो भी सीखना नहीं छोड़ सकता। मान लीजिए तकनीक के इस जमाने में जब मोबाइल का आविष्कार हुआ तो क्या जो बुजुर्ग थे वो सभी सीखे हुए थे?नहीं, उन्होंने भी इससे सामन्जस्य बैठाने के लिए उसे चलाना सीखा। तो व्यक्ति का सीखना–सिखाना निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो उसके विकास में बहुत सहायक है।

1.नवाचार से परिचयः– नवाचार एक बहुउपयोगी महत्व का विषय है.....नवाचार 2 शब्दों नव और आचार से मिलकर बना है.....जिसका अर्थ होता है नवीन व्यवहार या नवीन उपयोगी विधि का प्रयोग। नवाचार शिक्षा, विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, व्यापार, वाणिज्य, तकनीक आदि सभी क्षेत्रो में अपनी महत्ती भूमिका निभाता है। नवाचार को रुचिपूर्ण तरीके से सीखने का सारथी भी माना जाता है। नवीन विधाओं व तकनीकों से सीखना–सिखाना शिक्षा में नवाचार कहलाता है।

2 नवाचार की आवश्यकताः– हमें अब यह तो पता है कि सीखना व्यक्ति में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है लेकिन यह मानव स्वभाव है कि वो किसी भी एक व्यक्ति, वस्तु या तरीके से सतत् रूप से साथ बना नहीं रह सकता। उसे कुछ नयापन चाहिए होता है जिससे उसकी रूचि बनी रहे। वैसे सही भी है क्योंकि विद्वानों ने कहा है यदि परिवर्तनशीलता नहीं होगी तो जड़त्व आ जाएगा और जड़त्व आने का मतलब है विनाश। जैसे एक पहिया चलना छोड़ दे तो उसका महत्त्व समाप्त हो जाएगा और कुछ समय बाद वो सड़ गलकर नष्ट हो जाएगा। यदि व्यक्ति अपने किसी एक अंग को काम में लेना छोड़ दे तो वह अंग धीरे–धीरे काम करना बंद कर देगा इसीलिए परिवर्तनशीलता बहुत जरुरी है और इसी परिवर्तनशीलता को ही नवाचार कहा गया है।

हालाँकि परम्परागत तरीके से सीखने में भी कोई बुराई नहीं है लेकिन यदि उसी तरीके में नवाचार का तड़का लग जाए तो उस सीखने के जायके में चार चाँद लग जाएँगे। और सीखने व सिखाने वाले दोनों में रूचि बनी रहेगी। मुझे अधिगम का एक नियम याद आ रहा है कि घोड़े को पानी के पास ले जाया जा सकता है लेकिन उसे जबरदस्ती पानी नहीं पिलाया

जा सकता। यह तभी सम्भव है जब उसकी रूचि होगी.....तो किसी भी ऑब्जेक्ट को सिखाने के लिए उसे रुचिपूर्ण बनाना बेहद जरुरी है।

3.नवाचार के रूप या विधाएँः– वैसे तो नवाचार हर क्षेत्र में अपनी विशेष भूमिका रखता है। इसे सेवा क्षेत्र से लेकर उत्पादक क्षेत्र तक काम में लिया जा सकता है।

इसके विभिन्न रूप हैं जैसे–तकनीकी नवाचार, सेवा नवाचार, वाणिज्यिक नवाचार, व्यापारिक नवाचार, शैक्षिक नवाचार आदि। इन नवाचारों के माध्यम से व्यक्ति अपने–अपने क्षेत्र में पारंगत हो सकता है। दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की भी कर सकता है, जैसे एक उदाहरण के तौर पर जमीनी स्तर पर बताऊँ तो मैंने एक गन्ने के रस वाले को देखा वो बड़े अनोखे तरीके से रस बना रहा था। उसने कोई पुरानी मोटरसाइकिल खरीदकर उसमें ऐसा नवाचार किया की वो कोल्हू के बैल की तरह चलने लगी और उसने उसके पहिये में घुंघरू भी बाँध दिए जिससे एक अलग सी झनकार आने लगी। यह वहाँ से निकलने वालों के लिए एक रोचक माहौल बना रही थी। इसे देखने कुछ लोग जमा भी होने लगे तो जमा होने वाले लोगो में से 50% लोग जूस भी पीने लगे। तो देखा जाए तो कुल मिलकर नवाचार आपको किसी भी रूप में फायदा दे सकता है।

4.शिक्षा में नवाचारः– मैं राजस्थान शिक्षा विभाग में उच्च प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक हूँ और मैं शिक्षा में नवाचार की बात करता हूँ। मैं शिक्षा में नवाचार करने का समर्थक हूँ और इसके सकारात्मक परिणाम भी मैंने देखे हैं। एक प्राथमिक शिक्षक उस कारीगर की तरह है जो एक बहुमंजिला आकर्षक मकान की मजबूत नींव भरने का काम करता है और इस नींव को मजबूरी से भरने के किये मैं नवाचार रूपी ईंटों के प्रयोग पर बल देता हूँ। नवाचार से तात्पर्य कोई बहुत बड़ा झमेला नही है, उसमें हमें थोड़ा कल्पनाशील बनना है और थोडा सा बच्चों को रुचिपूर्ण तरीके से सिखाने पर चिंतन मनन करना है।

शिक्षा में नवाचार के कुछ तरीके जो मैंने अपनाये–

प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को सिखाने के लिए हम कुछ नवाचार कर सकते हैं। जैसेः– चार्ट से विभिन वर्णाक्षरों के अलग–अलग कटिंग तैयार करना, मात्रा की खिड़की वाली किताब बनाना जिसमें हर एक पृष्ठ पलटने पर अक्षर वही रहता है लेकिन मात्रा बदलती जाती है। ब्लैक या ग्रीन बोर्ड पर चित्रों के माध्यम से बच्चों को सिखाना। दम सराज खेल के माध्यम से पर्यायवाची व विलोम शब्द सिखाना। दो टीम बनाकर खेल के माध्यम से बोर्ड पर कुछ शब्द लिखकर उनको छँटवाना आदि ऐसी कई विधाएँ हैं जो हमारे सिखाने के उद्देश्य को साकार कर सकती है। मैं एक शिक्षक होने के नाते इस सब विधाओं को अपनाता हूँ व जब बच्चे इससे अच्छे से सीख जाते हैं तो मैं आत्मसंतुष्टि से अभिभूत हो जाता हूँ। अंत में आलेख पढ़ने वाले सभी सम्मानित पाठकों से यही आग्रह करना चाहूँगा कि आप किसी भी क्षेत्र में हो तो नवाचार जरूर करे यह आपको कई मायनों में फायदा तो देगा ही साथ में एक अलग पहचान भी देगा।

धन्यवाद

गौरव सिंह घाणेराव
(अध्यापक, लेखक, कवि, विश्लेषक)
अध्यापक L–2(हिंदी),
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मोरडू,
विकास खण्ड–सुमेरपुर,
जनपद–पाली, राजस्थान।

शिक्षा मे पुतली कला(पपैट्स) का महत्व

शिक्षण संवाद

शिक्षा मे पुतली (पपैट्स)का विशेष महत्व है। पुतली के माध्यम से हम शिक्षा को बहुत ही रोचक व मनोरंजन तरीके से सिखा सकते हैं। विशेष तौर से प्राथमिक कक्षाओं में यह बहुत ही लाभदायक है। प्राथमिक विद्यालयों में छोटे–छोटे बच्चे पुतली को देखते ही बड़े खुश हो जाते हैं। वे इसको बडे ध्यान से देखने व सीखने के लिए प्रयासरत रहते हैं। अगर हम इसे बड़ी कक्षाओं में दिखाते हैं तो वो भी ध्यान से देखते हैं।

कठपुतली बहुत ही प्राचीन रंगमंच पर खेला जाने वाला मनोरंजन का साधन है। इसका नाम कठपुतली मतलब काठ से बनी पुतली। बताया जाता है कि भगवान शिव ने काठ की मूर्ति में प्रवेश कर पार्वती का मन बहलाकर इस कला का आंरभ किया था। इसी प्रकार उज्जैन नगरी के राजा विक्रमादित्य के सिंहासन मे जुड़ी 32 पुतलियों का उल्लेख सिंहासन बतीसी नामक कथा मे हैं।

पहले हमारे बड़े बुजुर्गों से सुनते थे कि गाँव मे भी कठपुतलियों के खेल दिखाने के लिए राजस्थान, ओडिसा, कर्नाटक, तमिलनाडु से लोग आते थे। आज कल काठ से तो बनाने वाले बहुत कम रह गए है इसलिए यह अब पुतली ही रह गई है। पुतली जल्दी व कम लागत में बन जाती है लेकिन कठपुतली पर बहुत मेहनत लगती है इसलिए यह बहुत महँगी है।

आज कल हम पुतली के माध्यम से शिक्षा को खेल–खेल में सिखा सकते हैं। इसे सभी स्कूलों में लागू करना चाहिए। जीन्द जिले के जुलाना खण्ड के राजकीय कन्या प्राथमिक

पाठशाला के शिक्षक सुदेश सहरावत राजस्थान के उदयपुर से शिक्षा में पुतली कला का महत्व विषय पर दिसंबर 2019 में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद जब यह कला विद्यालय में आए तो उन्होंने बच्चों को पुतली दिखाई तो वो इसे देखते ही खुश तो बहुत हुए लेकिन उन्हें इसका नाम पता नहीं था। वे मन ही मन खुश थे क्योंकि उन्हें कुछ नया मिला देखने को।

पुतली के प्रकार : यह मुख्य रूप से 4 प्रकार की होती है–

1. धागा पुतली : यह अनेक धागों से जोड़कर चलाई जाती हैं। इसमें तीन से चार आदमी की जरूरत होती है जो कि उँगलियों से इसे चला सकें।

2. छाया पुतली : ये पहले चमड़े से बनाई जाती थी। इनमें छेद भी होते थे। इन्हें पर्दे के पीछे से लाइट लगाकर चलाया जाता है जिससे वो पर्दे पर दिखाई देती हैं। अब ये गत्तों से भी बनाई जाती है।

3. छड़ पुतली : ये पुतली लोहे की छड़ या काठ की डंडी की सहायता से गत्तों के द्वारा बनाई जाती है। यह छड़ की सहायता से चलाई जाती है।

4. दस्ताना पुतली : यह पुतली दस्तानों की तरह हाथ में पहनकर चलाई जाती है। इसे काठ, गत्ता, रूई, प्लास्टर व कपड़े की सहायता से बनाया जाता है। इसमें गर्दन से उपर का भाग बनाया जाता है और नीचे कपडों की सहायता से ड्रेस पहनाई जाती है। इसका एक रुप फिंगर प्पैटस भी होती है जो एक उँगली में पहनाकर चलाई जाती है। मुख्य रूप से पुतली के द्वारा हम बच्चों को सही तरह से समझा सकते हैं।

सुदेश कुमार सहरावत,
प्राथमिक शिक्षक,
राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला, शामलो कलां,
विकास खण्ड–जुलाना,
जिला–जीन्द,
हरियाणा।

विचारशक्ति

''शिक्षा और संस्कार''

शिक्षण संवाद

दोस्तो ! शिक्षा की संस्कार में क्या भूमिका है ?..... किस प्रकार से शिक्षा से संस्कार को नई दिशा प्रदान की जाती है... आइए जानते हैं... शिक्षा और संस्कार के बारे में – शिक्षा और संस्कार दोनों के संयोजन से मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होता है। जिस व्यक्ति ने शिक्षा और संस्कार दोनों को समझने की कोशिश की है, उस व्यक्ति ने अपने जीवन को नई उँचाइयों तक पहुँचाया है। वर्तमान समय में देखा जाए तो वही प्रगति कर पाया है जिसमें शिक्षा और संस्कार की जागरूकता है। शिक्षित वर्ग की संख्या ज्यादा है तथा वही वर्तमान में उतरोत्तर प्रगति कर रहा है।

शिक्षा – मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान में शिक्षा की अहम भूमिका रहती है। पौराणिक काल में शिक्षा प्राप्त करने एवं देने का अनोखा कार्य था। उस शिक्षा की आज दिन तक कोई पूर्ति नहीं कर पाया है। परन्तु वर्तमान समय में देखा जाए तो वास्तविक शिक्षा की कमी नजर आ रही है जो चिंता का एक बड़ा विषय है। वर्तमान में शिक्षा को केवल मात्र खानापूर्ति तक सीमित कर दिया गया है। बच्चे ने क्या सीखा है... क्या नहीं सीखा...क्या करना है... क्या नहीं करना चाहिए.... माता – पिता को कोई ध्यान नहीं है क्योंकि वर्तमान समय में माता – पिता के पास बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए समय नहीं है। दिन – रात धन के लालच में दौड़ रहे हैं। उधर बच्चे अंधकार में चले जा रहे हैं। वर्तमान में लोगों में तुलना करने की भावना बढ़ गई है। तुलना के कारण धन की ओर भाग रहे हैं। परंतु असली धन अपने बच्चों को शिक्षित करना होता है। वही बच्चे एक दिन बड़े होकर समाज का नेतृत्व करेंगे। समाज के पहिए को गति प्रदान करेंगे।

संस्कार – संस्कार का जैसा नाम वैसा अर्थ है। सब कुछ इस शब्द में ही समाहित है। यह शब्द पढ़ते ही मन में कुछ अलग ही भाव आ जाते हैं। संस्कार इंसान, पशु – पक्षी, जीव

– जंतु सभी को प्रभावित करता है। संस्कारों को सबसे ज्यादा प्रभावित वातावरण करता है। हमारे आसपास का वातावरण जैसे रहन – सहन, खान – पान, वेशभूषा और सांस्कृतिक परिवेश के अनुकूल ही गुणों का समावेश होता है। संस्कारों से मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान बिना बताए की जा सकती है। अच्छे संस्कारों से अच्छे परिवार, समाज, क्षेत्र की महत्वपूर्ण पहचान होती है। संस्कार एक ऐसी सीढ़ी है जो हमें भविष्य की सुनहरी राह दिखाती है।

अजीब दृश्य – कहीं शिक्षा है तो संस्कारों की कमी व कही संस्कार है तो शिक्षा की कमी – हाँ यह जो आप पढ़ रहे हैं वो सही पढ़ रहे हैं। फिर पढ़ने के बाद जरा अपने आसपास एक नजर भी डाल दीजिए। हमें एक पल में पता चला जाएगा कि स्थिति वाकई गम्भीर है। वर्तमान समय में हमें विभिन्न प्रकार से शिक्षा मिल जाती है क्योंकि पैसे का बोलबाला है और पैसों से मनचाही शिक्षा हासिल कर सकते हैं और युवा पीढ़ी मनचाही शिक्षा प्राप्त भी कर रही है। क्या यही वास्तविक शिक्षा है।..... नहीं इस शिक्षा में बहुत बड़ी कमी देखी जा सकती है और यह मुख्य कमी है संस्कारों की। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली एक रट्टू तोते के समान हो गई है। बड़ी से बड़ी डिग्री तो मिल जाती है.... परंतु संस्कार की डिग्री नहीं मिल पाती है। संस्कारों की कमी से वर्तमान में शिक्षित लोग कई तरह के अपराधों को अंजाम दे रहे हैं। जिसके बारे में किसी ने कोई कल्पना भी नहीं की हो। क्या यही शिक्षा है?चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है वह भी शिक्षित लोगों द्वारा.... पर क्यों?क्या इस शिक्षा में कुछ बदलाव करके संस्कारवान शिक्षा को बढ़ावा दें तो परिणाम कुछ बदल सकते हैं क्योंकि शिक्षा से कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान संभव है। शिक्षा के बिना समाज में अंधकार ही अंधकार नजर आयेगा। अगर उजाले की किरण लानी है तो शिक्षा को मुख्य मुद्दा लेकर चलना होगा। शिक्षा ही समाज का दर्पण है।....यह सब संस्कारों से ही संभव है।

कुमार जितेन्द्र,
वरिष्ठ अध्यापक गणित,
तहसील–सिवाना,
जनपद–बाड़मेर,
राजस्थान।

विचारशक्ति

किसी विषय को पढ़ाने में आने वाली समस्याएँ एवं समाधान

शिक्षण संवाद

प्रायः देखा जाता है कि अधिकांश शिक्षक शिक्षिकाएँ संस्कृत विषय को पढ़ाने में रुचि नहीं लेती हैं। जहाँ तक मैंने इसके कारणों के विषय में विचार किया तो सर्वप्रथम इस विषय की ''अल्पज्ञता'' ही इसको न पढ़ाने का सबसे बड़ा कारण है। बहुत ही कम शिक्षक – शिक्षिकाएँ संस्कृत विषय का सम्यक ज्ञान रखते हैं। यही कारण है कि वे संस्कृत शिक्षण से बचते हैं। यदि कुछ शिक्षक प्रयास भी करते हैं तो कई बार उनके समक्ष कुछ ऐसे जटिल स्थल आ जाते हैं जिनको पढ़ाने में वे स्वयं को असमर्थ पाते हैं। मैं ऐसा पूर्ण विश्वास के साथ इसलिए कह रही हूँ क्योंकि काफी शिक्षक अपनी इस प्रकार की समस्याओं के लिए मुझसे संपर्क करते हैं। मेरे द्वारा शीघ्र– अतिशीघ्र उनकी समस्या का समाधान करने का प्रयास भी किया जाता है। शिक्षकों की इन समस्याओं को देखते हुए एक दिन मुझे विचार आया कि क्यों न इस समस्या का कोई स्थाई समाधान किया जाए। अतः मेरे द्वारा कक्षा 3, 4 एवं 5 की ''संस्कृत पीयूषम'' पुस्तकों का हिंदी अनुवाद, काठिन्य– निवारण एवं अभ्यास कार्य लिखित रूप में तैयार करके व्हाट्सएप एवं फेसबुक के माध्यम से अधिकाधिक शिक्षकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

बेसिक शिक्षा विभाग को भी इस दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। दीक्षा एप पर भी संस्कृत पियूषम् के अधिकतर पाठों की अत्यल्प सामग्री ही उपलब्ध है। अन्य विषयों की भांति संस्कृत विषय के प्रति कभी भी शिक्षकों एवं छात्र– छात्राओं को प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, हिंदी, कला, सामान्य ज्ञान इत्यादि विषयों की प्रतियोगिताएँ विभाग द्वारा कराई जाती हैं, लेकिन क्या कभी संस्कृत विषय की प्रतियोगिता करायी जाती है?

ABRCC पद भी अब समाप्त हो चुका है और वर्तमान में **ARP** पद भी केवल हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय व अंग्रेजी के लिए ही सृजित है, क्या संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम में नहीं आता?

संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है, यदि संस्कृत को कक्षा 3 से ही रोचक तरीके से पढ़ाया जाए तो निश्चित रूप से शिक्षक एवं विद्यार्थियों को आनंद की अनुभूति होगी एवं संस्कृत भाषा के प्रति उनका संकोच भी समाप्त होगा। यदि शिक्षक प्रयास करें तो वो कुछ भी कर सकते हैं। जब हम अंग्रेजी पढ़ा सकते हैं जोकि एक विदेशी भाषा है तो संस्कृत क्यों नहीं? संस्कृत की लिपि भी सबकी परिचित देवनागरी लिपि ही है। यदि संस्कृत शिक्षण सम्यक रूपेण किया जाए तो आज जो हम लोग हिंदी को शुध्द रूप से नहीं लिखा पाते हैं, वह समस्या भी

स्वतः ही दूर हो जाएगी। विभाग को चाहिए कि संस्कृत के जानकार शिक्षकों कि मदद से (इस ओर भी ध्यान देकर) संस्कृत शिक्षण को प्रोत्साहित करे। समय–समय पर संस्कृत प्रशिक्षण भी शिक्षकों के लिए आयोजित किए जाएँ ताकि प्रशिक्षणों में उनकी समस्यायों का समाधान हो सके।

अभी लॉक डाउन के समय जब विभाग द्वारा ऑनलाइन कक्षा शिक्षण के आदेश हुए तो मेरे द्वारा अपने विद्यालय के बच्चों के लिए कक्षा 3, 4 एवं 5 के संस्कृत पीयूषम के पाठों को पढ़ाते हुए वीडियो बनायी गयी और आपने संपर्क में आने वाले शिक्षकों के साथ उनको शेयर भी किया गया, जिनके द्वारा भी शिक्षकों की काफी समस्याएँ हल हुईं।

अतः विभाग को चाहिए कि संस्कृत की ओर भी ध्यान दें अन्यथा वो दिन दूर नहीं जब संस्कृत भाषा का आस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। संस्कृत विषय को भी रोचक गतिविधियों एवं **TLM** के माध्यम से सरलतापूर्वक पढ़ाया जा सकता है। एक बार संस्कृत विषय के प्रति रुचि जागृत हो जाए तो व्यक्ति आनंद विभोर होकर जीवन यापन करता है ये मेरे अपने विचार हैं। यदि मेरे विचारों से किसी शिक्षक भाई–बहन की भावनाएँ आहत हुई हों तो उसके लिए अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ।

धन्यवाद।

ऋतु सिंघल,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अंबेहटा चाँद–1,
विकास खण्ड–रामपुरमनिहारान,
जनपद–सहारनपुर।

कस्तूरबा विद्यालय

शिक्षण संवाद

प्रस्तावना – स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 26 जनवरी 1950 से लागू भारतीय संविधान में 6–14 वर्ष तक के सभी बालक – बालिकाओं को अनिवार्य रूप से शिक्षित बनाने का संकल्प लिया गया था। वर्ष 1986 में आयी नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। वर्ष 1992–93 में उत्तर प्रदेश में सभी के लिए शिक्षा परियोजना के गठन के बाद सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत हुई और वर्ष 2004 आते – आते बालिका शिक्षा के लिए नये प्रोजेक्ट के रूप में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खोले जाने का निर्णय सरकार ने लिया। यह आवासीय पद्धति पर खोले जाने की योजना बनी और कार्य पूरा करने के लिए इन विद्यालयों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग व अल्पसंख्यक समुदाय एवम् बी पी एल परिवारों की उन बालिकाओं की 6 से 8 स्तर तक की व्यवस्था की जाती है जो या तो कभी स्कूल गयी नहीं अथवा उन्होंने कुछ समय बाद ही स्कूल छोड़ दिया हो। इन विद्यालयों के तीन मॉडल तैयार किए गए हैं। मॉडल एक में 100 बालिकाओं के पंजीयन करने का लक्ष्य रखा गया।

विषय का विकास – बालिकाओं के पंजीयन के बाद इनके आवास, भोजन, वस्त्र आदि की पूरी व्यवस्था पूरे तीन वर्ष विद्यालय द्वारा होती है। इन विद्यालयों के लिए वहीं पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है जो परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 6–8 तक पढ़ाया जाता है। पहले 6 माहों में उनमें कक्षा –5 के स्तर के सापेक्ष दक्षताएं लाने के लिए एक ब्रिज कोर्स का सहारा लिया जाता है। इन विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की संख्या बढ़ी है। क्योंकि गरीब व पिछड़े क्षेत्र की

बालिकाओं को पढ़ने का अवसर एक ठहराव के साथ मिला। घर पर यह बालिकाएँ माता – पिता के कामों में हाथ बँटाने और छोटे भाई – बहनों को पालने में अपना पढ़ने का सुनहरा अवसर खो रहीं थीं। इस विद्यालय में रहकर इन्होंने पढ़ाई के साथ – साथ व्यावसायिक शिक्षा भी प्राप्त की। के० जी० बी० वि० बालिकाओं के लिए एक उपयुक्त विद्यालय है।

पक्ष व विपक्ष – शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी के अर्जित ज्ञान व मापन करने की एक प्रक्रिया है। इस तेजी से परिवर्तित हो रही दुनिया में शिक्षा को विकास का आधार माना गया है व शासन बच्चों विशेषकर बालिकाओं को शिक्षा के प्रति वचनबद्ध व कार्यशील है। लेकिन इसके पश्चात भी व्यावहारिक धरातल पर देखने पर बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति वैसी प्राप्त नहीं हो रही है। अनेक बालिकाएँ स्कूल शिक्षा से वंचित हैं। बालिकाओं की साक्षरता दर आज भी बालकों की तुलना में बहुत पीछे है। ये विद्यालय अपनी स्थापना के उद्देश्य अर्थात बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व जीवन शैली में अपेक्षित सुधार ला पा रहे हैं। बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ योजना को सार्थक बनाने के लिए कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में अब 12 वीं तक की बालिकाएँ पढ़ सकेंगी। भारत की जनसंख्या 2001 के अनुसार महिला साक्षरता दर मात्र 53.67% थी। महिलाओं में निरक्षरता का प्रभाव उनके बच्चों के स्वास्थ्य एवं उनके रहन – सहन पर भी पड़ता है। इसलिए बालिकाओं का शिक्षित होना भी उतना आवश्यक है जितना बालकों का।

निष्कर्ष – अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यकों की प्रचुरता वाले दुर्गम क्षेत्रों से संबंधित बालिकाओं के लिए अगस्त 2004 से कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय नाम से एक योजना प्रारंभ की गई है। इन विद्यालयों का नामकरण हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की धर्मपत्नी कस्तूरबा गांधी के नाम पर किया गया है। यहाँ पर रखकर ही बालिकाओं को तीन वर्ष तक अध्ययन करना पड़ता है। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि के० जी० बी० वि० में बालिकाओं के रहन – सहन से लेकर, पढ़ाई, व्यावसायिक शिक्षा और उनकी सुरक्षा बेहतर तरीके से की जा सकती है।

अनुरानी शर्मा
प्रधानाचार्य,
क० गां० आ० बा० विद्यालय,
विकास क्षेत्र–मंजूरीगढी
जनपद–अलीगढ़।

बच्चों से दोस्ती

रेनू शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर,
विकास खण्ड–लोनी,
जनपद–गाजियाबाद।

शिक्षण संवाद

मैं रेनू शर्मा प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर में सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हूँ। जब मैंने इस शिक्षण व्यवसाय को ज्वाइन किया था तब यह ठान लिया था कि मैं इन बच्चों के लिए कुछ ना कुछ अवश्य करूँगी और मेरे मन में हमेशा यह बना रहता था कि क्या मैं यह कर पाऊँगी?यह नन्हें मुन्ने बच्चे हमारे परिवेश से बिल्कुल अलग होते हैं और उनकी भाषा सब कुछ अलग होती है। कुछ बच्चे तो उत्साह से स्कूल आते हैं और पढ़ते हैं पर कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो माँ–बाप के द्वारा जबरदस्ती स्कूल भेजे जाते हैं। मैं एक ऐसा ही अनुभव आपके साथ साझा करना चाहती हूँ।

मैं कक्षा चार की अध्यापिका हूँ। मेरी कक्षा में एक खुशी नामक बालिका ने प्रवेश लिया। जब वह कक्षा में आई तो बहुत डरी सहमी रहती थी, कुछ भी बात नहीं करती थी। मैंने उसको हर दिन नोटिस किया कि वह ऐसे क्यों रहती है? फिर मैंने उसकी मम्मी को बुलाया। पूछने पर पता चला कि वह घर में भी ऐसे ही रहती है और किसी से भी बात नहीं करती है। यहाँ पर तो और ढेर सारे बच्चे हैं। इस वजह से नहीं बोलती होगी। मैंने अपने मन में ठान लिया कि मैं इस बच्ची को अवश्य पढ़ाकर रहूँगी। इसके लिए मैंने उस बच्ची पर विशेष ध्यान देना शुरू किया जिसमें मैंने यह पाया कि वह बच्ची बहुत संकोच करती है और बच्चों में घुल मिल नहीं पाती है उसकी अपनी ही एक अलग दुनिया है। वह सबसे बहुत डरती है अपनी बात कहने में भी उसको डर लगता है। मैंने उसकी यह कमी दूर की और कक्षा में जो भी कुछ करती कोई भी खेल खिलाती या पढ़ाती तो सबसे पहले उसको ही बुलाती। मैंने उसको उसकी इंपॉर्टेंस समझाई। मैंने उसको बताया कि उसका कक्षा में क्या महत्व है और वह भी आम बच्चों जैसी ही है । मैंने उससे बिल्कुल एक दोस्त के रूप में बात की जिसका यह परिणाम निकला कि आज वह अपनी किताबों को पढ़ती है और उसे स्कूल आना बहुत अच्छा लगता है। अपना सारा काम करती है, उसकी लिखावट बहुत अच्छी है और कक्षा के हर काम में वह भाग लेती है। सबसे बड़ी बात यह है कि वह रोज साफ–सुथरी विद्यालय आती है और उसका पढ़ाई में बहुत मन लगता है।

विद्यालय के हर एक कार्यक्रम में बढ़–चढ़कर भाग लेती है। मुझे यह सब देख कर बहुत खुशी होती है। मैं मिशन शिक्षण परिवार संवाद का धन्यवाद करती हूँ जिसकी वजह से मुझे प्रेरणा मिलती रहती है।

पौधों के भाग

पौधों के हैं कितने भाग?
आओ करते सबकी बात,
पत्ती बनाती भोजन सबको
तना पहुँचाता खाना सबको।

जड़ देता खनिज लवण और पानी
पत्ती क्रिया से भोजन बनाती उसको,
जड़ कहती है खड़े रहो
हर मुश्किल में अड़े रहो।

श्वसन क्रिया से ऑक्सीजन देती
पत्तियाँ कार्बन डाइऑक्साइड लेतीं,
शाखाएँ देतीं छाया हमको
शुद्ध बनाते पौधे पर्यावरण को।

पुष्प बड़ा ही आकर्षक भाग
सबके हिय में करता राज,
निषेचन क्रिया से फल बनाते
फलों से हम अपनी शक्ति बढ़ाते।

फलों से ही बीज बनते
बीजों से ही नये पौधे उगते,
काम बराबर सब हैं करते
कभी न आपस में ही लड़ते।

रंजना डुकलान,
सहायक अध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय धौडा
विकास खण्ड–कल्जीखाल,
जनपद–पौड़ी गढ़वाल।

अंग्रेजी व्याकरण – EMOTION WORDS

टी एल एम बनाने की सामग्री–

पॉपकॉर्न के 2 पुराने टब, स्कैच पैन, कलर, पेन्सिल, रबर।

टी एल एम बनाने की विधि–

सर्वप्रथम पॉपकॉर्न के एक डिब्बे पर चित्र के अनुसार लड़की का चित्र बनाएँगे, फिर लड़की के चेहरे और और उसके हाथ में पकड़े बैनर की जगह काट लेंगे, कलर कर लेंगे। दूसरे डिब्बे पर थोड़ी–थोड़ी दूर पर प्रत्येक भाव (**EMOTION**)का चेहरा बनाएँगे एवं बैनर वाली जगह उस भाव का नाम लिखेंगे।

टी एल एम का प्रयोग–

इमोशन चेहरे वाला टब, लड़की वाले टब के अन्दर रखेंगे, फिर अन्दर वाले टब को घुमाकर प्रत्येक भाव को लड़की के चेहरे पर एवं उस भाव के नाम को बैनर में फिट करके बच्चों को **Emotion words** सिखाएँगे।

टी एल एम का लाभ–

1– सभी कक्षाओं के लिए उपयोगी है।
2– बच्चों को पढ़ाने में आसानी रहेगी।
3–बच्चे खेल–खेल में अंग्रेजी जैसे कठिन विषय को सीख जाते हैं।

हेमलता गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मुकन्दपुर,
विकास खण्ड–लोधा,
जनपद–अलीगढ़।

कहानी का नाम-जीरो है हीरो....

लाभ–

1.) बच्चे आरोही अवरोही क्रम को आसानी से सीखते हैं।

2) संख्याओं का ज्ञान।

3) संख्याओं के मान का ज्ञान।

4) इकाई दहाई सैकड़ा.....का ज्ञान।

4) जीरो की उपस्थिति से संख्याओं का मान किस प्रकार बदलता है.....आसानी से सीखते हैं।

4) नैतिक मूल्यों का विकास।

कहानी कुछ इस प्रकार है.....

कहानी शुरू करने से पहले हम संख्याओं का परिचय बच्चों से कराएँगे और मनोरंजक तरीके से आरोही अवरोही क्रम का ज्ञान कराएँगे।

10 दोस्त होते है संख्या 0 से 9 तक संख्या 1 से 9 में अच्छी दोस्ती होती है और वो जीरो को अपने आगे कुछ नही समझते और हमेशा उसका मजाक उड़ाते हैं एक दिन सभी दोस्त मिलकर पार्टी में जाते है संख्या 1 से 9 तक एक साथ मिलकर मस्ती करते हैं और बेचारा 0 अलग–थलग रहता है। पार्टी में ललिता दीदी भी आती हैं और जब वो ये सब देखती हैं तो वो इन सबको एक करने के लिए तरीका अपनाती हैं। वो सभी संख्याओं को बुलाती हैं और किसी भी एक संख्या को जीरो के साथ खड़ा कर देती हैं। अब हम बच्चों से पूछेंगे कितना हुआ अब जीरो हटाकर पूछेंगे अब कितना है। इसी प्रकार संख्या के साथ 2 फिर 3 फिर 4.....जीरो लगाकर पूछेंगे कितना हुआ बच्चे उत्तर देंगे। इस प्रकार हम उन्हें बताएँगे किस प्रकार 0 के लगने से संख्या का मान बदल जाता है। साथ ही उन्हें सिखाएँगे कि हमें कभी भी किसी को कम नहीं समझना चाहिए। सबकी अपनी अपनी वैल्यू होती है हमें सभी का सम्मान करना चाहिए।

रीता,
प्रधानाध्यापक,
मॉडल प्राइमरी स्कूल पंजाब नगर,
विकास खण्ड–चमरौआ,
जनपद–रामपुर।

सूखे पत्ते हैं कितने सुन्दर

(आओ पत्तियों से चिड़ियाघर बनाएँ)

यह एक सरल कला शिल्प गतिविधि है जिसमें केवल सूखी पत्तियों की आवश्यकता होती है। बच्चे उन पत्तियों को इकट्ठा करते हैं, जो वे अपने आसपास पेड़ों के नीचे पड़े देखते हैं। पत्तियों को पुरानी नोटबुक, अखबार के पन्नों के अंदर तब तक दबाया जाता है जब तक कि वे सूख न जाएँ।

पत्तियों के सूखने के बाद बच्चे उन्हें विभिन्न प्रकार के आकर्षक परिवेशीय चीजों को बनाने के लिए उपयोग कर सकते हैं। एक ड्राइंग–शीट पर फेविकोल के साथ पत्तियों को चिपका सकते हैं। सूखी पत्तियों के साथ काम करने से बच्चों को अपने आसपास के विभिन्न प्रकार के पेड़ – पौधों को देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो पर्यावरण शिक्षा में भी उपयोगी हो सकता है। यह बच्चे को प्रति से परिचित कराने के साथ–साथ बच्चे की रचनात्मकता, अवलोकन कौशल को बेहतर बनाने का रोचक तरीका है।

उमेश गिरि गोस्वामी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय पिपरिया मंडन,
विकास क्षेत्र– बरखेड़ा,
जिला– पीलीभीत,
उत्तर प्रदेश।

English Medium Diary

English is the third most spoken language in the world. English is a west Germanic language that was first spoken in early Medieval England and eventually became a global language. English is a largest Language by number of speakers. In India English is the second most spoken Language. Every companies requires a certain level of proficiency in English.

Most of the software are created in English. Most of official works happen in English. Knowing multiple languages is impressive, reading, writing and speaking an international language is appealing. In our India an English medium education system is one that usage English as the language of teaching.

English- Medium schools provide a special educational system in English like many activities, Debates, stories and poem writing, Essay writing competitions etc. English medium schools have skilled teachers and an environment which help students in learning. By the help of teachers and teaching aids student develop their communication skills.

Schools have many facilities which help in learning like computer, projector, comfortable sitting arrangements, airy rooms, English books, Library etc. People need to teach their kids in English because it is vital for their future and for that we must start early.

English medium schools provide numbers of extra - curricular activities in English which make students active and multi- tasking, so we should change our educational pattern and increase the usage of English in schools. There is as

biggest lack of English language in government schools of India. Here it is not criticising government run schools but these are few advantage of English medium schools. Teachers of government schools can not do anything because they have not any facilities like Computer, projectors, sports accessories etc. Qualities of education need to be improved in these schools so that parents and students can be satisfied with educational system. English will be spread in all over India including villages too.

We should take steps to improve English in all over India by learning from English medium schools. We should learn discipline, Pattern, Activities, teaching method, syllabus etc. by them. Now its a need of the new India and for every

Mrs. Nirmala Singh,
Assistant Teacher,
Upper Primary School Chhichha,
Block-Khajuha,
District-Fatehpur.

UPLIFTMENT OF SOCIETY WITH COMMUNITY

Dedication of government teachers lead to change in the mind set of community. “Community “ a well-known word ,a very special word which means a lot in Government schools.

Previously, teachers of Government schools were afraid of how the villagers would be?what they say but based on their work they could change their thinking, working and habits and the same happened.SumanSharma ,headincharge of UPS mankrol said that,” I had changed their expressions and thoughts with my true positive thinking and hard work”. It's a sense of pride for every teacher when society think well about him.when UNICEF team came to our school on 13 September 2018 and when they talked to the villagers they were shocked seeing their awareness on different aspects .

The right to education which came into the effect in April 2010 mandates the implementation of the rights and signed in this act be monitored by the the local structures such as School Management Committee (SMC)and local authority active structures and this participation from the community can facilitate the process of identifying gaps, highlight violations and improve implementation and further reinforcement of the RTE Act. In my school ,parents participate actively in every meeting, campaign, celebrations, competitions,summer camps etc. villagers ofmankrol made a responsible citizen by the involvement in awareness programs like awareness on Polio ,no use of plastic bags, awareness for better environment ,planting more trees ,one house one tree program, half glass of water campaign for water conservation , communicable diseases etc. They also participate in school chaloAbhiyanrellies, cultural programs ,drama, community mobilization program regarding retention of child,PrabhatFeri,local sports competition ,essay and poster making competition based on swachh Bharat Abhiyan,celebration of national day like Independence Day, Republic Day . I had conducted regular meetings of SMC, PTM,meenamanch sessions for parents .

As villagers participate in activities of school then, there developed an interesting relationship between Gurus,villagers and the students.when saw the hard work of the teachers then, they impressed by the glorious personality and they gave respect and

take respect to build an Unbreakable relationship between the community, students and teachers. In future, it lead to improve the social and mental development of a child and problems of short attendance, dropouts, enrollment can be solved.“I feel very happy as after a long time, today I played the game and won the first prize”said one of the grandparents Guddi Devi ,mother of Priyanka of class 8, said that,” I felt very happy when mam honoured me in MeenaManch session for my skit which was presented by my daughter and her friends “.

Students will understand their duties and earnestly achieve the great objectives of education . Then, our country will become great .our country will become clean India, Green India, healthy India ,progressive India and an Incredible India with joint efforts of teachers , community and students.

Sumansharma,
Head incharge,
English medium PS and UPS
Mankrol (integrated),
Block-Iglas,
District-Aligarh

प्रेरक प्रसंग

गौतम बुद्ध की शिक्षा

शिक्षण संवाद

हमारे देश भारत में एक से बढ़कर एक समाज सुधारक हुए। उनमें से एक गौतम बुद्ध हुए। जिनकी शिक्षाएँ आज भी प्रत्येक समाज के लिए प्रासंगिक हैं। सत्य, अहिंसा, दया, करुणा और त्याग की साकार मूर्ति थे। इनके आविर्भाव से हमारी भारतभूमि धन्य हो गयी।

गौतम बुद्ध का जन्म एक राज परिवार में हुआ था। इनका जन्म लुम्बिनी वन में 563 ईसा पूर्व वैसाख मास के शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा के दिन इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रिय शाक्य कुल के राजा शुद्धोधन के घर में हुआ था। इनकी माता का नाम महामाया था जो कोलीय वंश की थी। इनके जन्म के सातवें दिन ही माता का निधन हो गया था। इनका लालन –पालन महाप्रजापती गौतमी ने किया था। बालक का नाम –सिद्धार्थ रखा गया। जिसका अर्थ है ''वह जो सिद्धि प्राप्त के लिए जन्मा हो।'' महान विद्वानों और साधुओं ने भविष्यवाणी की कि ''यह बच्चा महान राजा बनेगा या पवित्र पथ –प्रदर्शक बनेगा।'' गौतम बुद्ध अन्य नामों से भी जाने जाते हैं।

सिद्धार्थ, महात्मा बुद्ध, शाक्यमुनि, तणंकर, शणंकर और मेघंकर आदि प्राचीन नाम है। गौतम बुद्ध एक श्रमण थे जिनकी शिक्षाओं पर बौद्ध धर्म का प्रचलन हुआ। सिद्धार्थ बचपन से ही दया, करुणा और त्याग की साक्षात मूर्ति थे। ये सारे गुण उत्कर्ष की पराकाष्ठा को प्राप्त कर समरस हो गये थे।

सिद्धार्थ अपने प्रथम नवजात शिशु और पत्नी यशोधरा को छोड़कर, संसार को दुखों से मुक्ति दिलाने एवं सत्य व दिव्य ज्ञान की खोज में रात्रि को ही गृह त्याग कर चले गए थे। वर्षों की कठोर तपस्या के बाद बोध गया (बिहार में) बोधिसत्व नामक वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई और सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध बन गये। गौतम बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षाएँ आज भी समाज के लिए पथ प्रदर्शक का काम करती हैं। बुद्ध द्वारा दी गयी शिक्षा से हमें कुछ न

कुछ सीख अवश्य मिलती है।

एक समय की बात है जब गौतम बुद्ध के पास एक शिष्य आया और उसने बुद्ध से कहा कि कृपया आप मुझे अपना शिष्य बना लें। मैं आपसे बहुत सारी ज्ञान की बातें सीखना चाहता हूँ, जिससे मैं अपना ज्ञान बढा सकूँ। तब बुद्ध जी ने कहा कि यदि आप मुझसे शिक्षा ग्रहण करना चाहते हो तो दस दिन बाद वापस आना। वह व्यक्ति दस दिन बाद फिर वापस आया और कहा कि आपसे मुझे कुछ सीखना है। बुद्ध ने वही बात फिर दोहराई और कहा कि दस दिन बाद वापस आओ।

इस तरह वह व्यक्ति कई महीनों तक बुद्ध के पास आता रहा। आखिरकार एक दिन उस शिष्य ने पूछ ही लिया – ''आप मुझे अपना शिष्य बनाकर शिक्षा क्यों नहीं देते हो? कृपया आप मुझे शिक्षा दें।''

बुद्ध ने शिक्षा देने के पहले कहा – ''बेटा जाओ, एक गिलास पानी लाओ।''

कहने के अनुसार शिष्य एक गिलास पानी ले आया।

बुद्ध ने फिर कहा – ''बेटा जाओ और इसके अलावा एक गिलास पानी ले आओ।''

बुद्ध के अनुसार वह शिष्य एक गिलास पानी फिर से ले आया।

बुद्ध ने शिष्य से कहा– ''अब एक गिलास का पानी दूसरे गिलास में डाल दो।''

वह शिष्य बोला कि– ''यदि पहले गिलास का पानी दूसरे गिलास में डालता हूँ मैं तो पहले गिलास का पानी बिखर जायेगा लेकिन समायेगा नहीं।'' तब बुद्ध ने समझाते हुए शिष्य से कहा कि मैं यही तुमसे कहना चाहता हूँ। तुम अभी सीखने के लिए तैयार नहीं हो। तुम्हारे अन्दर पहले से ही पूर्वाग्रहों से युक्त ज्ञान भरा पड़ा है, जिन्हें तुम सत्य और शाश्वत मानते हो। फिर तुम कुछ नया कैसे सीख सकते हो?

जिस प्रकार पहले गिलास को खाली करने पर ही दूसरे गिलास के पानी को उसमें डाल सकते हो। इसलिए कुछ नयी बातें सीखने के लिए तुम्हें अपने दिमाग को खाली करना पड़ेगा। खुद के पुराने विचारों को त्याग कर नया सीखने के लिए।"

वह व्यक्ति बुद्ध की बातें समझ गया और नया ज्ञान अर्जित करने की सोचने लगा।

इस प्रकार गौतम बुद्ध द्वारा दी गयी इस शिक्षा से हमें यह सीख मिलती है कि हमें सीखने से पहले अपने मन –मस्तिष्क को सीखने के लिए तैयार करना चाहिए।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली,
शिक्षा क्षेत्र–अमौली,
जनपद–फतेहपुर।

प्रेरक प्रसंग

सुखदेव थापर

शिक्षण संवाद

यद्यपि देश की स्वतन्त्रता के लिए हँसते–हँसते प्राणों की आहुति दे देने वाले अमर शहीदों के जीवन से जुड़ी प्रत्येक घटना ही आज की पीढ़ी के लिए प्रेरक प्रसंग है तथापि जिलों की धरती पंजाब से उपजे अलमस्त नौजवान सुखदेव थापर जी के जीवन से जुड़े अनेक प्रेरक प्रसंगों में से दो उनके जीवन के अंतिम दिनों से ही सम्बन्धित हैं।

पहला प्रसंग तब का है जब 07 अक्टूबर 1930 को शहीदे आजम भगतसिंह जी और राजगुरु जी के साथ– साथ सुखदेव जी को फाँसी की सजा सुनाई गई। इस फैसले ने सम्पूर्ण देश मे विरोध की लहर चला दी और फैसले को बदलवाने के लिए जगह–जगह आंदोलन होने लगे। सुखदेव जी को जब इन विरोध प्रदर्शनों का पता चला तो उनको दुःख हुआ क्योंकि वो चाहते थे कि आजादी की यज्ञवेदी ठंडी न पड़े। उनका सोचना था कि उनके प्राणोत्सर्ग से अनेक नौजवान माँ भारती को स्वतंत्रता दिलाने की लड़ाई में आगे आने को प्रेरित होंगे। इसीलिए उन्होंने जेल से संदेश भिजवा दिया कि ''वास्तव में हमारी सजाओं को बदल देने से देश का उतना भला नहीं होगा, जितना फाँसी पर चढ़ने से।''

इस प्रकार जहाँ एक तरफ उनके सन्देश ने विरोध की दिशा को स्वतंत्रता संग्राम की धार को और पैना करने की तरफ मोड़ दिया, वहीं स्वयं के जीवन से महत्वपूर्ण स्वतन्त्रता का संदेश भी दिया।

दूसरा प्रसंग फाँसी के समय से जुड़ा है। फाँसी के लिए जब सुखदेव जी, भगत सिंह जी और राजगुरु जी को फाँसी के तख्त पर ले जाया गया तो सुखदेव जी ने जी भर कर ''इंकलाब जिंदाबाद'' के नारे तो लगाये ही, साथ ही ''भगत सिंह जिंदाबाद'' और ''राजगुरु जिंदाबाद'' के नारे भी लगाए। ऐसा करने के पीछे उनका सन्देश स्पष्ट था कि ''देश के लिए प्राणोत्सर्ग से बड़ा कोई पुण्य कृत्य नहीं और देश पर खुद को न्योछावर करने वालों से बड़ा कोई नायक नहीं।''

ऐसे थे स्वातन्त्रय वीर अमर शहीद सुखदेव थापर जी। ऐसे नायक को सादर नमन!!

दीपक कौशिक
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भीकनपुर बघा,
विकास क्षेत्र–कुंदरकी,
जनपद–मुरादाबाद।

बाल कहानी

फिर धरती खिलखिलाने लगी

शिक्षण संवाद

बिन्नी के स्कूल में आज ''पृथ्वी दिवस'' कार्यक्रम की तैयारियाँ जोरों–शोरों से चल रहीं थीं। जहाँ समर्थ, सपना, अमर, जैकी प्रोजेक्ट वर्क में सर की मदद ले रहे थे। वहीं शिबू भी बगीचे में आम के पेड़ के नीचे बैठकर ''पृथ्वी को कैसे साफ–सुथरा बनाया जाए?'' विषय पर कविता लिखने का प्रयास कर रहा था। अंशू ने तो स्लोगन लिखने की पूरी तैयारी कर ली थी कि किस तरह वह एक बड़े से चार्ट पर हरी–भरी पृथ्वी बना कर लायेगा और सुन्दर–सुन्दर शब्दों में अपने बनाये हुए स्लोगन सजा–सजा कर लिखेगा।

सुबह ही असेंबली में प्रिसिंपल सर ने बताया था कि जो स्टूडेंट सबसे अच्छी तरह पृथ्वी को हरा–भरा, साफ–सुथरा कैसे रखा जाए? पर अपनी अभिव्यक्ति देगा चाहे वह प्रोजेक्ट के माध्यम से हो या स्लोगन के माध्यम से हो या कविता–कहानी हो तो उस बच्चे को ज्यूरी ''क्लीन एंड ग्रीन स्टूडेंट आफ स्कूल'' का एवार्ड देगी।

प्रिंसीपल सर की घोषणा सुनकर हर बच्चा अपनी–अपनी समझ, अपने–अपने तरीकों से पृथ्वी के साफ–सुथरे और हरे–भरे रहने के बिन्दुओं पर विचार करने लगे। अब तो हर बच्चा एक–दूसरे से अच्छा करने की कोशिश की खोज में लग गये।

''मैं तो लाइब्रेरी जा रही हूँ'' किट्टू ने अपनी सहेली नम्रता को कहा। ''अरे! लाइब्रेरी में घंटा भर दिमाग खपाओगी। ''घर चलकर मम्मी के फोन में गूगल पर सर्च कर लेंगे।'' नम्रता ने अपना गूगल ज्ञान बघारा। ''अरे नहीं! मुझे गूगल पर नहीं लाइब्रेरी की किताबों से नया खोजने में अच्छा लगता है। किताबें पढ़ने का जो आनंद आता है। वह गूगल में सर्च करने पर नहीं मिलता है।'' किट्टू ने नम्रता से कहा। ''मैं तो अपने भैया से पूछूँगा। वही मेरी मदद करेंगे।'' दीपू ने कहा क्योंकि उसे हमेशा ही लाइब्रेरी की भारी–भरकम किताबों से डर लगता था। ''पर मैं तो अपनी मम्मी की मदद लूँगी। वह हमेशा ही मुझे कुछ न कुछ नया ही बताती हैं।'' रिया को फैन्सी ड्रेस कम्पटीशन याद आ गया। मम्मी के बताने पर ही वह टी–पॉट बनी थी और जो डायलॉग मम्मी ने बताये थे। उसने अच्छी तरह याद करके सुना दिये थे। उसको फर्स्ट प्राइज मिला था।

इस बार भी मम्मी उसको अच्छे से समझाएँगी और वह अच्छा करेगी। ऐसा उसे अपने ऊपर विश्वास था। सभी बच्चे पूरे जोश से अपनी–अपनी बातें कर रहे थे एक –दूसरे से। बस बिन्नी ही एक तरफ उदास खड़ी थी। बस सोच रही थी कि वह क्या करे? जिससे वह भी सबको बता सके कि उसे भी अपनी धरती से प्यार है। वह भी उसको हरा–भरा रखना चाहती है।

वैसे उसके पास एक छोटा सा बगीचा है जिसमें ढेर सारे रंग–बिरंगे फूल खिलें हैं। वह और उसका छोटा भाई टिन्नू दोनों मिलकर अपने बगीचे की देखभाल करते हैं। उनके घर के बराबर में एक छोटी सी जगह में सीमेंट, मिट्टी और टूटे–फूटे टायर वगैरह फालतू सामान पड़ा था। बिन्नी और टिन्नू ने पड़ोस वाली आंटी से इजाजत लेकर उस जगह को साफ कर डाला। बेकार टायरों को कलर करके बहुत सुन्दर बना दिया। किसी पर मिकी बनाया तो किसी पर

माउस। रंग–बिरंगी डिजायनों से वह टायर बहुत सुन्दर लगने लगे। पापा की मदद से उपजाऊ मिट्टी डाली और ढेर सारे तरह–तरह के बीज गाड़ दिये। वह नियमित रूप से उनमें पानी देते। धीरे–धीरे कोंपलें खिलने लगीं। बिन्नी और टिन्नू उन्हें देखकर बहुत खुश होते।

चारों ओर खिले हुए फूल, फूलों पर मंडराती तितलियाँ चारों ओर फैली हुई खुशबू सबको अपनी ओर खींचती। सब बिन्नी और टिन्नू की प्रशंसा करते कि इन्होंने इतनी बेकार पड़ी जगह को बहुत सुन्दर बना दिया। टिन्नू तो अपनी लगाई गई मिर्चें और टमाटर सबको बाँट आता। उसको टमाटर और मिर्चों की चटनी बहुत पसंद थी। माँ हर शाम उसके लिए चटनी जरूर बनातीं। पर यहाँ तो बात प्रोजेक्ट बनानें की थी। उसे चिंता सताने लगी कि न तो उसे डाइंग बनानी आती है न ही कविता लिखनी आती है।

गाना!!! न बाबा न!!! एक बार गाया था गाना। बहुत बेसुरा था। सबने मजाक उड़ाया। उस दिन से उसकी कभी हिम्मत ही न पडी कि वह गाना गाये। घर पहुँची तो मम्मी ने उतरा चेहरा देखकर पूछा– ''क्या हुआ बिन्नी? तुम्हारा चेहरा क्यों लटका हुआ है?"

''कुछ नहीं माँ! बिन्नी माँ को बताकर परेशान नहीं करना चाहती थी।''

''नहीं बेटा! कोई न कोई बात जरूर है?'' माँ ने कहा।

ये मम्मियाँ भी न! जानें कैसे मन की सारी बात जान लेती हैं? बिन्नी ने मन ही मन सोचा। ''मम्मी! मेरे स्कूल में ''पृथ्वी दिवस'' पर एक कार्यक्रम है जिसमें मुझे कोई प्रोजेक्ट, गीत, कहानी, कविता या स्लोगन प्रतियोगिता में भाग लेना है। पर माँ आप तो जानती हैं न मुझे अच्छी ड्राइंग बनानी नहीं आती और न ही कुछ गाना आता है। मैं कैसे बता पाऊँगी सबको कि मैं भी अपनी धरती को उतना ही साफ–सुथरा और हरा–भरा रखना चाहती हूँ जितना कि और लोग?''

''परेशान होना किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। धीरे–धीरे अपनी कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करो।'' माँ ने प्यार से समझाते हुए कहा। बिन्नी स्कूल नहीं आना चाहती थी पर स्कूल के बच्चे किस–किस तरीके से धरती को हरा–भरा और प्रदूषण मुक्त रखने के बारे में बताएँगे–समझाएँगे इसलिए वह आ गई।

निश्चित समय पर कार्यक्रम शुरू हुआ। मंच पर बहुत सारे अतिथि बैठे हुए थे। कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों के चेहरे पर एक अलग ही खुशी थी। बच्चे मंच संचालक की घोषणा के बाद आते और अपनी–अपनी प्रस्तुति देते। शौर्य, धैर्य के प्रोजेक्ट तो इतनें सुन्दर बने थे कि हर बच्चा उन्हे छू–छू कर देख रहा था। रिया की मम्मी ने तो फिर इस बार सुन्दर सी धरती का रूप दिया और रिया ने भी बताया कि अगर आप पेड़–पौधे लगाएँगे तो मैं इतनी ही सुन्दर और हरी–भरी बनी रहूँगी।

रिया के लिए देर तक ताली बजती रहीं। दीपू के बने स्लोगन बहुत चमकदार और अच्छे थे। किट्टू ने अपने भाषण में कहा– ''हमें धरती को प्रदूषण मुक्त करने के लिए पेड़–पौधे लगाने चाहिए। अपनी नदियों को साफ–सुथरा रखना ही होगा हमें।'' किट्टू का प्रभावी भाषण सुनकर संचालक महोदय ने किट्टू की बहुत प्रशंसा की। हर बच्चे की प्रस्तुति एक से बढ़कर एक थी।

संचालक महोदय ने कहा कि अभी सब बच्चों को बिस्किट और फल दिए जा रहे हैं। जब तक बच्चे इन्हें खाएँगे तब तक ज्यूरी अपना फैसला कर लेगी क्योंकि सारे बच्चों ने अपना–अपना बेहतरीन प्रदर्शन किया है। इधर बिन्नी पीछे चुपचाप बैठी सब देख रही थी। सारे बच्चे अब बिस्किट और फल खा चुके थे। वह उत्सुकता से ''क्लीन एंड ग्रीन स्टूडेंट

ऑफ स्कूल'' एवार्ड का इन्तजार कर रहे थे कि ये किसको मिलेगा। उधर बिन्नी ने देखा कि कुछ बच्चों ने अपने बिस्किट के रैपर और फलों के छिलकों को अपनी–अपनी सीट के नीचे डाल दिया तो कहीं लॉन में डाल दिया। बिन्नी उठी उसने सारे रैपर और छिलके इकट्ठे किए और डस्टबिन में डाल दिए। इसके लिए उसने कई चक्कर लगाये क्योंकि उसके हाथों में सारा कूड़ा एक बार में नहीं आ पा रहा था। उधर मंच पर सारे बच्चों को प्राइज बाँटे जा रहे थे और बिन्नी कूड़ा फेंकनें में लगी थी।

अब हाथ धुलकर अपनी सीट पर बैठ चुकी थी कि अचानक ही उसका नाम पुकारा गया। बिन्नी चौंक गई ''मेरा नाम पर क्यों?'' मैंने किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया इसलिए अवश्य ही प्रिसिंपल सर मुझे डाँटेंगे। ''बिन्नी की टाँगें कँपकँपाने लगी। जैसे–तैसे वह स्टेज पर पहुँची। प्रिसिंपल पर ने ''क्लीन एंड ग्रीन स्टूडेंट ऑफ स्कूल का एवार्ड'' मंचासीन डी.एम सर द्वारा देने की घोषणा की।

बिन्नी को तो विश्वास ही नहीं हुआ कि ये हो क्या रहा है? वह भौंचक्की सी सबको देखे जा रही थी।

डी.एम सर ने कहा––''बिन्नी! हर बच्चे ने अपनी समझ और बूझ के साथ समारी धरती के बारे में सोचा और समझा। मैं इन सभी बच्चों को शुभकामनाएँ देता हूँ कि ये बच्चे अपने जीवन में अच्छा करें पर बच्चों तुमको जो कह रहे हो उसे करके भी दिखाना होगा तभी समाज में व्याप्त हर समस्या खत्म हो पायेगी। हमें कहना ही नहीं है वरन् उसे बिन्नी की तरह करके दिखाना भी है।

बिन्नी ने दिल से धरती को स्वच्छ रखना चाहती है। अतः उसने बगैर इनाम के लालच में तुम्हारे फैलाये बिस्किटों के रैपर और फलों के छिलकों को उठाकर डस्टबिन में डाला। जबकि तुम्हें रोज समझाया जाता है पर तुमने जल्दबाजी में वह रैपर और छिलके वहीं डाल दिये।

बेटा! अब समय आ गया है कि हमको करके दिखाना भी है बगैर ये सोचे–समझे कि लोग क्या कहेंगें?जबकि बिन्नी ने अपने मन से महसूस करके ये सब किया।

हमें भी बच्चों इनाम के लालच में आये बगैर देश हित में सोचना चाहिए।

यह कहकर बिन्नी के सर पर डी.एम सर ने हाथ फेरा और उसे एवार्ड दिया।

''सर!'' एक आवाज आई सबका ध्यान उस आवाज की ओर गया।

''सर! बिन्नी का अपना एक बगीचा भी है जिसमें तरह–तरह के फूल खिले हैं। टमाटर, मिर्च और धनिया भी लगा हुआ है।'' ये आवाज किट्टू की थी जो मंच पर पीछे की ओर खड़ी थी उसने सबको बताया।

''अरे वाह! तो मैं भी कभी तुम्हारे बगीचे को देखनें आऊँगा'' डी.एम सर ने कहा।

''जी सर! आइएगा। तब तक मैं और हमारे सारे साथी मिलकर अपने स्कूल और मोहल्ले को सुन्दर और हरा–भरा बना देगें।'' बिन्नी ने सबकी तरफ देखकर कहा।

हाँ! हाँ क्यों नहीं? हम सब बिन्नी के साथ हैं। स्वच्छ धरती, सुन्दर धरती

डॉ0 प्रवीणा दीक्षित,
हिन्दी शिक्षिका,
के.जी.बी.वी. नगर क्षेत्र,
जनपद–कासगंज।

बाल फिल्म

आई एम कलाम

(प्रेरक, मर्मस्पर्शी, यथार्थवादी, बच्चों के अनुकूल, दमदार अभिनय से भरपूर बाल फिल्म)

शिक्षण संवाद

आई एम कलाम की कहानी आई एम कलाम एक गरीब राजस्थानी लड़के छोटू (हर्ष मायर) की कहानी है जो ए पी जे अब्दुल कलाम का बहुत बड़ा प्रशंसक है और उनसे मिलना चाहता है. फिल्म का कथ्य गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर कर रहे नन्हें छोटू के इर्द–गिर्द घूमता है, जो विपरीत परिस्थितियों में जोश और जज्बे को बनाए रखता है। छोटू की प्रेरणा पूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम हैं। कलाम के एक भाषण को सुनने के बाद जीवन के प्रति छोटू का नज़रिया बदल जाता है। दिन भर बाल मजदूरी के बाद शाम को किताबों के साथ वक्त गुजार कर छोटू अपनी पढ़ाई पूरी करने की हर संभव कोशिश करता है। छोटू को यकीन है कि एक दिन वह ए पी जे अब्दुल कलाम जैसी बड़ी शख्सियत बनेगा।

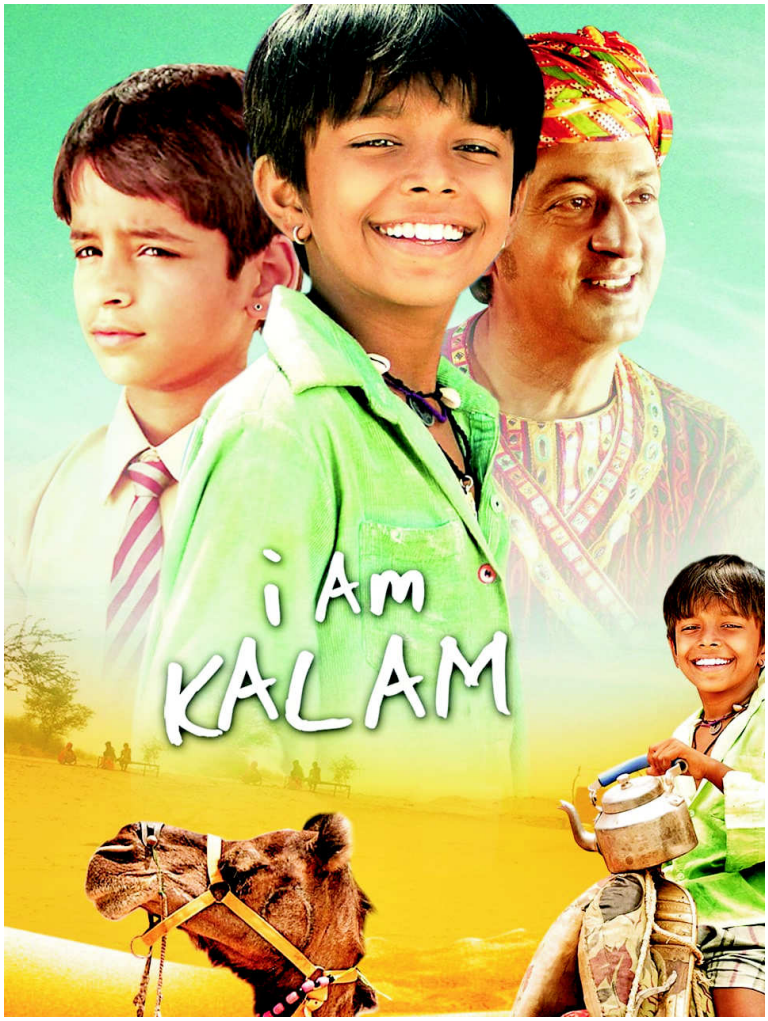

फिल्म का संदेश–बच्चे न केवल जानकारी के लिए..... बल्कि परिवर्तन के लिए भी स्कूल जाते हैं।

फिल्म की विशेषता है कि फिल्म में बॉलीवुड के बैडमेन गुलशन ग्रोवर ने एक गुडमैन की भूमिका निभाई है। फिल्म के मुख्य कलाकार हर्ष मायर ने तो अपने अभिनय से सबको अचंभित ही कर दिया। हर्ष मायर का अभिनय देखकर यह कह पाना मुश्किल है कि यह उनकी पहली फिल्म है जिसमें वह लीड रोल में हैं। हर्ष को इस साल ही सर्वोत्तम बाल कलाकार का नेशनल पुरस्कार मिल चुका है। दूसरे बालक के रूप में हसन साद का योगदान बराबरी का है। फिल्म के संगीत में आपको राजस्थानी रंग मिलेगा क्योंकि फिल्म

की पटकथा ही राजस्थानी बच्चे पर आधारित है। फिल्म में गांव–देहात की झलक को कैमरे पर बहुत बारीकी से दर्शाया गया है। फिल्म में खुद पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने भी एक छोटा सा किरदार निभाया है। यह एक बेहतरीन फिल्म है।

असली एहसास तो फिल्म देखने से ही होगा। मेरा अनुरोध–प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यालय के बच्चों को यह फिल्म जरूर दिखाए.... क्या पता हमारे विद्यालय में भी कोई छोटू मिल जाए जो कलाम बनना चाहे।

इस फिल्म ने कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरुस्कार जीते हैं।

यूट्यूब लिंक– https://youtu-be/gZy4vIGf7MY

समीक्षा प्रस्तुतिः
सबीना साहनी,
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय घुराट
(अंग्रेजी माध्यम),
विकास क्षेत्र–बंगरा
जनपद–झाँसी (उ. प्र.)

बाल कविता

नाव चली

नाव चली नानी की नाव चली
चिंटू की नानी की नाव चली
एक लंबे सफर पे
नाव में चले एक आम, एक केला
एक सेब एक संतरा
और काले–काले अंगूर नाव चली
नानी की नाव चली
चिंटू की नानी की नाव चली
एक लंबे सफर पे
नाव पे चले
आलू और गोभी
भिंडी और लौकी
गोल–गोल बैंगन
नाव चली नानी की नाव चली
चिंटू की नानी की नाव चली
एक लंबे सफर पे
नाव में चले
एक तोता, एक मैना
एक मुर्गी, एक बतख
और सफेद–सफेद कबूतर
नाव चली
नानी की नाव चली
चिंटू की नानी की नाव चली एक लंबे सफर पे
नाव में चले
एक कुत्ता, एक बिल्ली
एक बंदर एक बकरी
और प्यारा–प्यारा खरगोश
नाव चली
नानी की नाव चली
चिंटू की नानी की नाव चली
एक लम्बे सफर पे

सीमा पाण्डेय,
सहायक अध्यापिका,
कंपोजिट स्कूल काकड़ा,
विकास खण्ड–मुरादनगर,
जनपद–गाजियाबाद।

कविता शिक्षण

पठार

जो मैदान से ऊपर होता,
और पर्वत से नीचा हो,
जिसका शीर्ष भाग हो समतल,
किनारों का ढाल तीखा हो,
300 मीटर से ले करके,
ऊँचे मीटर एक हजार।
इन्हें पठार कहते हैं,
खनिजों के होते भंडार।।

पर्वत

आस-पास के क्षेत्र से ऊँचा,
और आधार चौड़ा हो।
पर्वत वह कहलाता है,
जिसका शिखर नुकीला हो।

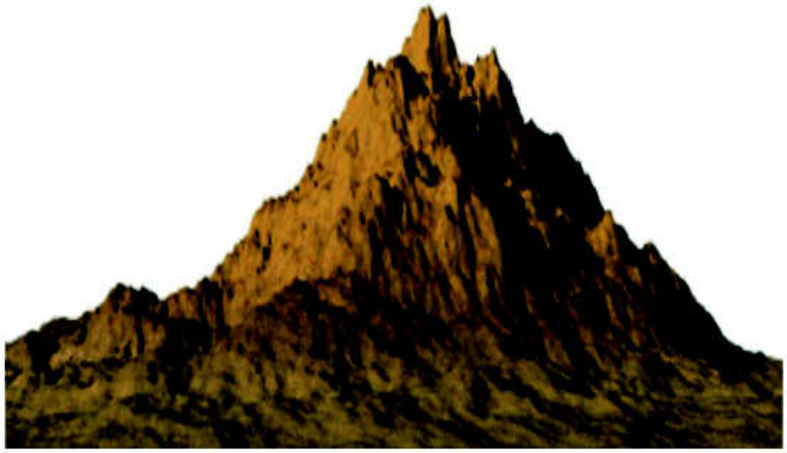

चार प्रकार के ये होते हैं।
वलित,ब्लॉक,अवशिष्ट कहते है।
चौथा ज्वालामुखी प्रकार।
शुरू हो मीटर एक हजार।

दक्षिण भारत की नदियाँ

दक्षिण भारत की नदियां हैं,
कृष्णा, भीमा और कावेरी।
साथ साथ बहती तुंगभद्रा,
और बहती है नदी गोदावरी।।
गिरती जाके अरब सागर में,
नदी नर्मदा और ताप्ती।
महानदी,गंगा और ब्रह्मपुत्र,
ये गिरती बंगाल की खाड़ी।।

उत्तर भारत की नदियाँ

उत्तर भारत की नदियां हैं,
झेलम, सतलज,गंगा व्यास।
यमुना, गोमती, केन, घाघरा,
कल -कल बहती नदियाँ खास।।

रचना-
आर के. शर्मा,(प्र.अ.)
UPS, चित्रवार, मऊ चित्रकूट

सदविचार

रबीन्द्र नाथ टैगोर जी के शिक्षा संबंधी विचार

शिक्षण संवाद

रबीन्द्र नाथ टैगोर जी का जन्म बंगाल के एक अत्यंत ही संपन्न एवं सुसंस्कृत परिवार में 6 मई 1881 को हुआ था। समृद्ध परिवार में जन्म लेने के कारण रबीन्द्र नाथ जी का बचपन बड़े आराम से बीता, परंतु विद्यालय का अनुभव एक स्वप्न के समान रहा जिसके कारण भविष्य में उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने के लिए एक अभूतपूर्व प्रयास किया। कुछ माह तक वे कलकत्ता में ओरिएंटल सेमिनरी में पढ़ें, पर उन्हें यहाँ का वातावरण बिल्कुल पसंद नहीं आया इसके उपरांत उनका प्रवेश नॉर्मल स्कूल में कराया गया लेकिन यहाँ का अनुभव अत्यन्त कटु रहा। विद्यालय जीवन के इन कटु अनुभव को याद करते हुए उन्होंने बाद में लिखा जब मैं स्कूल भेजा गया तो मैंने महसूस किया कि मेरी अपनी दुनिया मेरे सामने से हटा दी गई है, उसकी जगह लकड़ी के बेंच तथा सीधी दीवारें मुझे अपनी अंधी आँखों से घूर रही हैं। इसलिए जीवनपर्यन्त गुरुदेव विद्यालय को बच्चों की प्रति रुचि एवं आवश्यकता के अनुरूप बनाने के प्रयास में लगे रहे।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वह 1878 में इंग्लैंड गए वहाँ भी वे कुछ ही दिन तक ही बाइटन स्कूल के विद्यार्थी के रूप में रह पाए, अंततः वे भारत लौट आए। 1881 ईस्वी में कानून की पढ़ाई के विचार से वे विलायत गए पर वहाँ पहुँचने के उपरांत वकालत की पढ़ाई को करने का उन्होंने विचार त्याग दिया और वे स्वदेश वापस आ गए। इस प्रकार उन्होंने औपचारिक शिक्षा तो प्राप्त नहीं की पर पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों का सर्वश्रेष्ठ तत्व गुरुदेव के व्यक्तित्व का हिस्सा बन गया। टैगोर जी का विचार था कि शिक्षा विकास का ऐसा साधन है, जिससे व्यक्ति की मानसिक, भावनात्मक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

इस प्रकार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति की आंतरिक क्षमताएँ वाह्य रूप में अभिव्यक्त होती हैं।

1901 में बोलपुर के समीप रबीन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रह्मचर्य आश्रम के नाम से एक विद्यालय की स्थापना की थी, जिसे बाद में शांति निकेतन के नाम से पुकारा गया। तत्पश्चात उन्होंने अपने को पूर्णतः शिक्षा साहित्य एवं समाज की सेवा में अर्पित कर दिया। गुरुदेव एक महान अध्यापक ही नहीं थे वरन एक ऋषि थे। शिक्षा से संबंधित गुरुदेव की रचनाएँ शिक्षा के विभिन्न स्तरों एवं पक्षों, प्राथमिक उच्च ग्रामीण शहरी व्यक्ति समुदाय का चित्रण करती हैं। उनकी कई कविताएँ शिक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। लिपिका में संग्रहित तोता कहानी, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर सर्वाधिक तीखा व्यंग्य है, यह दर्शाता है कि विभिन्न स्तरों पर शिक्षा की व्यवहारिक समस्याओं की उनकी कितनी गहरी समझ थी। इन्हें 1913 में उनकी प्रसिद्ध कृति गीतांजलि के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला था। आइए हम इनके अनमोल विचारों को भी जानें

1– रबीन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं, कि तथ्य कई हैं ,पर सत्य एक ही है।
2–फूल जो अकेला है, काँटों से ईर्ष्या ना करें, जोकि गिनती में अधिक हैं।
3–जो अपना है वह मिलकर ही रहेगा।
4– सच्चा प्रेम स्वतंत्रता देता है, अधिकार का दावा नहीं करता।
5–जब हम विनम्रता में महान होते हैं, तभी हम महानता के सबसे करीब होते हैं।
6– सिर्फ नदी किनारे खड़े होकर पानी देखने से आप नदी पार नहीं कर सकते।
7– मौत प्रकाश को खत्म करना नहीं है, यह सिर्फ दीपक को बुझाना है क्योंकि सुबह हो गई है।
8– वह मनुष्य जो दूसरों का अच्छा करने में बहुत ज्यादा व्यस्त रहता है वह स्वयं अच्छा होने के लिए समय नहीं निकाल पाता है।

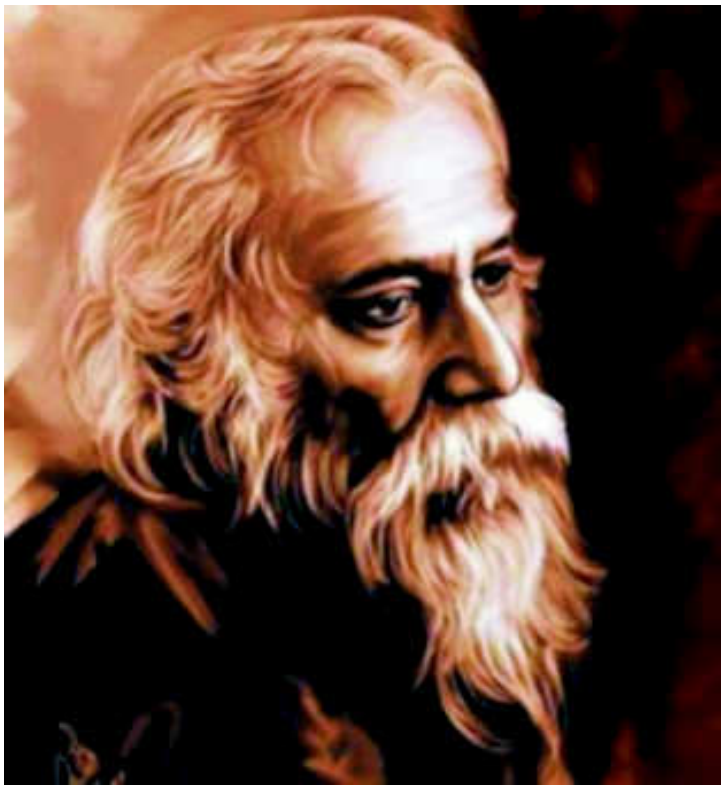

नीता वार्ष्णेय,
प्रधानाध्यपिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय
आलमपुर–कायस्थान,
विकास खण्ड–अतरौली,
जनपद–अलीगढ़।

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_655.html

कुछ नया करते हैं

आओ बच्चों! कुछ नया करते हैं
गुमसुम बीत रहा है समय, इसे हरा–भरा करते हैं।

स्कूल का वो आँगन नहीं है तो क्या
इस व्हाट्सअप ग्रुप को ही चलाते हैं
नयी–नयी सुन्दर कृतियों से आओ
अपने ग्रुप की गैलरी को सजाते हैं।

बोर्ड पे नहीं पढ़ पा रहे हो तो क्या
कीबोर्ड को लिखने का माध्यम बनाते हैं
मैं प्रश्न लिखूँ, तुम लिखो उत्तर
मिलकर अपने–अपने दिल के भाव दर्शाते हैं।

किताबें नहीं हैं पढ़ने को तो क्या
जीवन के अनुभव को माध्यम बनाते हैं
लॉक डाउन के इस इतिहास को
अपने शब्दों से समझते–समझाते हैं।

दुनिया कैद हुई है घरों में आज
इस कैद में भी चलो मिलकर मुस्कुराते हैं
बीत ही जाएगी गम की ये रात अँधेरी
हम मिलकर सोशल डिस्टैंसिंग अपनाते हैं।

फिर से जगेंगे ख्वाब सुनहरे
फिर से हँसेंगे ये उदास चेहरे
फिर से घूमेंगी मस्तों की टोली
गूँजेगी सड़कों पर फिर से बोली

फिर से खुलेगा अपना स्कूल
फिर से पढ़ेंगे हम हर दु:ख भूल
फिर से मिलकर हम तिरंगा लहराएँगे
भारत को मिलकर विश्व गुरु बनाएँगे।

रचयिता
रीता गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
मॉडल प्राइमरी स्कूल
बेहट नंबर–एक,
विकास क्षेत्र–
साढोली कदीम,
जनपद–
सहारनपुर।

खेल विशेष

पोलो

शिक्षण संवाद

पोलो एक टीम खेल है। जिसे घोड़े पर बैठकर खेला जाता है। इसका उद्देश्य प्रतिद्वंदी टीम के विरुद्ध गोल करना होता है। इसे ब्रिटिश काल के दौरान काफी ख्याति मिली। इसमें खिलाड़ी एक प्लास्टिक या लकड़ी की गेंद को बड़े हॉकी जैसे डंडे से मारकर सामने वाली टीम के गोल में डालने की कोशिश करते हैं। परंपरागत तरीके में यह खेल बड़ी रफ्तार से एक बड़े खुले मैदान में खेला जाता है। पोलो का उद्भव प्राचीन फारस से माना जाता है। फारस में 525 ई. में "पुल्लू" के नाम से यह खेल खेला जाता था। कुछ लोग भारतीय राज्य मणिपुर से इसका उद्भव मानते हैं। भारत में पोलो खेल का प्रचलन तुर्कों ने प्रारम्भ किया था।

पोलो एक खेल के साथ–साथ मनोरंजन का भी अच्छा साधन है। इस खेल में प्रत्येक टीम में 4–4 खिलाड़ी होते हैं जो एक फिक्स पीरियड में गेम को समाप्त करते हैं। यह खेल अत्यधिक प्राचीनतम खेलों में से एक है। पोलो खेल की अंतर्राष्ट्रीय संस्था का नाम फेडरेशन ऑफ इंटरनेशनल पोलो है। इसमें 100 देश सदस्य हैं। जिसमें अभी तक चौंपियनशिप में अधिकतर 16 देश ही भाग लेते हैं। पोलो अंतर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना सन 1938 में हुई तथा इसका मुख्यालय ब्रवली हिल्स में है। पोलो लीग की शुरुआत भारत में जयपुर राजस्थान से हुई थी।

आईपीएल समेत प्रो कबड्डी लीग और कुश्ती लीग की तर्ज पर देश की पहली पोलो लीग की शुरुआत हुई इसका आगाज जयपुर से हुआ था। मार्च के पहले सप्ताह से शुरू होने वाली इस लीग की खास बात यह रही कि ट्रेडिशनल पोलो के विपरीत यह रात में खेला गया जिसमें देश–विदेश के पूर्व खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था। लीग के संस्थापक चिराग पारीक ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा था कि बाकी लीग की तरह पोलो लीग में भी खिलाड़ियों की नीलामी हुई थी पोलो लीग के सभी मैच फ्लडलाइट्स में खेले गए। रात में गेंद पर खिलाड़ी का फोकस रहे इसलिए सफेद गेंद की जगह रंगीन गेंद का प्रयोग किया गया।

यह खेल जिस मैदान में खेला जाता है उसे फील्ड कहते हैं। फील्ड की लंबाई – 274 मीटर, फील्ड की चौड़ाई – 146 मीटर होती है। इसमें जो दोनों तरफ गोल पोस्ट होते हैं उसकी चौड़ाई 7 मीटर से अधिक होती है। पोलो की बॉल का भार 99–130 ग्राम के बीच होता है। पोलो बॉल का व्यास 3– 3.5 इंच होता है। टिप की लंबाई –9.25 इंच होती है। टिप का भार 160–240 ग्राम होता है। मैलेट की ऊँचाई फिक्स नहीं होती। खिलाड़ी संख्या– 4–4 पोलो खेल का मैदान देखने में फुटबॉल के खेल के मैदान के जैसा लगता है। इस खेल में हेलमेट पहनना जरुरी होता है।

इस खेल को खेलने का तरीका।

1– इस खेल में 4 खिलाड़ी होते हैं जिनकी नंबरिंग 1,2,3,4 से होती है।

2– एक खिलाड़ी का स्थान गोल के पास होता है जो विपक्षी खिलाड़ी की ओर से आने

वाले बॉल को गोल होने से रोकता है।

3– दूसरा खिलाड़ी विपक्षी टीम के गोल के पास होता है जिससे वह बॉल आने पर उसे आसानी से विपक्षी की तरफ गोल कर सके।

4– बाकी दो खिलाड़ी का काम बॉल को विपक्षी के गोल के पास पहुँचाना होता है।

पोलो खेल की शब्दावली।

चुकस या चुकर्स, पोलो मैलेट, पोलो सैडल, हैंडीकैप, पोनी, मार्टिंगल, टिप, नियर साइड, ऑफसाइड।

1– चुकस – यह एक टाइम पीरियड होता है जो 7:30 मिनट का होता है।

2– पोलो मैलेट – यह खेल स्टिक होता है जिसके माध्यम से बॉल को हिट करते हुए गोल तक ले जाते हैं।

3– टिप – मैलेट में नीचे की ओर एक लकड़ी का बना हुआ टिप लगा होता है यह मैलेट का जरूरी भाग होता है जिसकी लंबाई 9.25 इंच होती है।

4– पोलो सैडल – यह एक प्रकार की सीट होती है जो घोड़े के ऊपर रखी जाती है जिससे घोड़े पर बैठने वाला व्यक्ति नीचे ना गिरे। इस सैडल में अधिक सेफ्टी बढ़ा दी जाती है जिससे खिलाड़ी नीचे ना गिरे।

5– पोनी – खेल में जो घोड़ा प्रयोग किया जाता है उसे पोनी कहते हैं।

6– हैंडीकैप – यह खिलाड़ी का स्कोर होता है जो उनका रैंक डिसाइड करता है।

7– मार्टिंगल – मार्टिंगल की सहायता से घोड़े के सिर को कंट्रोल किया जाता है।

8– नियर साइड – मैलेट को दाएँ हाथ से पकड़कर बाएँ हाथ की तरफ ले जाकर बॉल को हिट करना नियर साइड कहलाता है।

9– ऑफसाइड – जब मैलेट को दाएँ हाथ से पकड़कर दाएँ हाथ की तरफ से ही बॉल को हिट किया जाता है तो उसे ऑफसाइड कहते हैं।

10– लाइन ऑफ द बॉल – यह लाइन दो विपक्षी खिलाड़ी जब एक ही दिशा में जाते हैं तो उनके बीच बनती है।

पोलो खेल से संबंधित प्रमुख ट्राफी –

पृथ्वीपाल सिंह कप, अर्जेंटीना कप, क्लासिक कप, क्वीन्स कप, राधा मोहन कप, रोलेक्स स्वर्ण कप।

भारत में स्थित कुछ पोलो क्लब के नाम –

1– 61 केव पोलो क्लब, जयपुर
2– चिंकारा पोलो क्लब, जयपुर।
3– अग्राम राइडिंग एंड पोलो क्लब, बेंगलुरु
4– अमेचेर राइडर्स क्लब, मुम्बई
5– आल मणिपुर पोलो असोसिएसन, इंफाल
6– आँध्रप्रदेश राइडिंग क्लब, हैदराबाद
7– आर्मी पोलो एंड राइडिंग क्लब, दिल्ली
8– आर्टीलेरी पोलो क्लब, नासिक
9– एएससी पोलो क्लब, नई दिल्ली
10– कलकत्ता पोलो क्लब, कोलकाता।

रवि मौर्य,
सहायक शिक्षक,
प्राथमिक विद्यालय चकबाकरपुर द्वितीय,
विकास खण्ड–हथगाम, जनपद–फतेहपुर।

योग–विशेष

योगः कर्मसु कौशलम् - शीर्षासन

शिक्षण संवाद

जिस प्रकार कहा जाता है कि फलों का राजा आम। उसी प्रकार शीर्षासन सभी आसनों का राजा कहलाता है। सिर के बल किए जाने की वजह से इसे शीर्षासन कहते हैं। शीर्षासन एक ऐसा आसन है जिसके अभ्यास से हम सदैव कई बड़ी–बड़ी बीमारियों से दूर रहते हैं। हालाँकि यह आसन काफी मुश्किल है। यह हर व्यक्ति के लिए सहज नहीं है। शीर्षासन से हमारा पाचनतंत्र अच्छा रहता है, रक्त संचार सुचारू रहता है। शरीर को बल प्राप्त होता है।

शीर्षासन करने की विधि–

शीर्षासन को सुबह खाली पेट ही करना चाहिए। शीर्षासन को शुरुआत में दीवार का सहारा लेकर करना चाहिए। कुछ दिन अभ्यास करने के बाद दोनों हाथों की उँगुलियों को इन्टरलॉक करके सिर के ऊपर साइड में लगाकर पर्वतासन की स्थिति मे कोहनियों पर बल देते हुए धीरे–धीरे पैरों को ऊपर उठाने का प्रयास करना चाहिए।

शीर्षासन के अद्‌भुत लाभ–

शीर्षासन के अभ्यास से शरीर में खून का बहाव नियमित बना रहता है तथा शरीर के सभी अंग कार्यशील बने रहते हैं। इस आसन के अभ्यास से दिमाग में रक्त प्रवाह बढ़ता है। यह मानसिक तनाव को दूर करता है तथा सिरदर्द, साँस की बीमारी (दमा) को ठीक करता है। इस आसन से स्नायु संस्थान, रक्तसंचार तंत्र, पेशियाँ, पाचनतंत्र, जननांग, उत्सर्जन तंत्र एवं फेफड़े शक्तिशाली बनते हैं तथा उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि होती है। यह आसन शरीर में स्फूर्ति, उत्साह और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

इससे स्मरणशक्ति एवं बुद्धि का विकास होता है। शीर्षासन मेधा, प्रज्ञा, बुद्धि तथा शरीर को शक्ति प्रदान करता है, जिससे ब्रह्मचर्य पालन करने में मदद मिलती है। इस आसन के अभ्यास से मधुमेह, बहूमूत्र, प्रमेह, पागलपन (उन्माद), हिस्टीरिया, धातु–दुर्बलता, शुक्र तारल्य और स्वप्नदोष आदि रोग दूर होते हैं। इससे अनिद्रा, अपच, कब्ज, पेट के सभी रोग दूर होते हैं तथा यह आसन शौच खुलकर लाता है। शीर्षासन बालों को सफेद होने व झड़ने से रोकता है तथा सफेद बालों को काला करता है, चेहरे की झुर्रियों को मिटाता है।

इस आसन का अभ्यास करने वालों की आयु में वृद्धि होती है तथा उनमें अधिक समय तक युवावस्था बनी रहती है। इस आसन से आँखों की रोशनी बढ़ती है, शरीर तेजमय व

कांतिमय बनता है तथा मन शांत व स्थिर हो जाता है। इस आसन से मन के खराब विचार दूर होकर मन ध्यान व साधना में लीन होने लगता है। शीर्षासन स्त्रियों के गर्भाशय सम्बन्धी विकारों को दूर करता है। स्त्रियों के बांझपन को दूर करने में यह आसन लाभकारी होता है। इस आसन को करने से हिस्टीरिया रोग में भी लाभ मिलता है।

सावधानियाँ–

शीर्षासन को योग जानकारों की देख–रेख में ही करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि हो सकती है। इस आसन का अभ्यास पहले कुछ समय तक ही करें क्योंकि इस आसन के समय शरीर के दूषित तत्वों का खून के साथ प्रवाहित होकर मस्तिष्क में पहुँचने का भय रहता है, जिससे मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शीर्षासन करने से पहले अन्य योग आसनों का अभ्यास करने से शरीर में रक्त की शुद्धि होती है, जिससे शीर्षासन से बुरा प्रभाव नहीं पड़ता और शरीर को पूर्ण लाभ मिलता है। गर्भवती व मासिक धर्म वाली स्त्रियों को इस आसन को नहीं करना चाहिए।

यह आसन 150 से अधिक व 100 से कम रक्तचाप वाले व्यक्तियों को नहीं करना चाहिए। कान के बहने व किसी प्रकार का घाव होने पर इस आसन को न करें। कमजोर दिल वाले, पुराने जुकाम तथा कोष्ठबद्धता के रोगियों को भी इस आसन को नहीं करना चाहिए। अधिक भोजन करने के बाद तथा भारी पेट इस आसन को न करें। शीर्षासन करने के बाद 1 घंटे तक स्नान न करें तथा आसन के तुरन्त बाद खुली हवा में न निकलें।

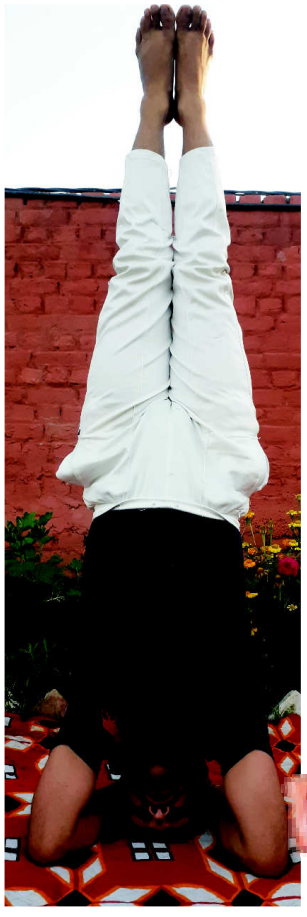

खिलेन्द्र सिह,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय चंगेरी,
विकास खण्ड–डिलारी,
जनपद–मुरादाबाद।

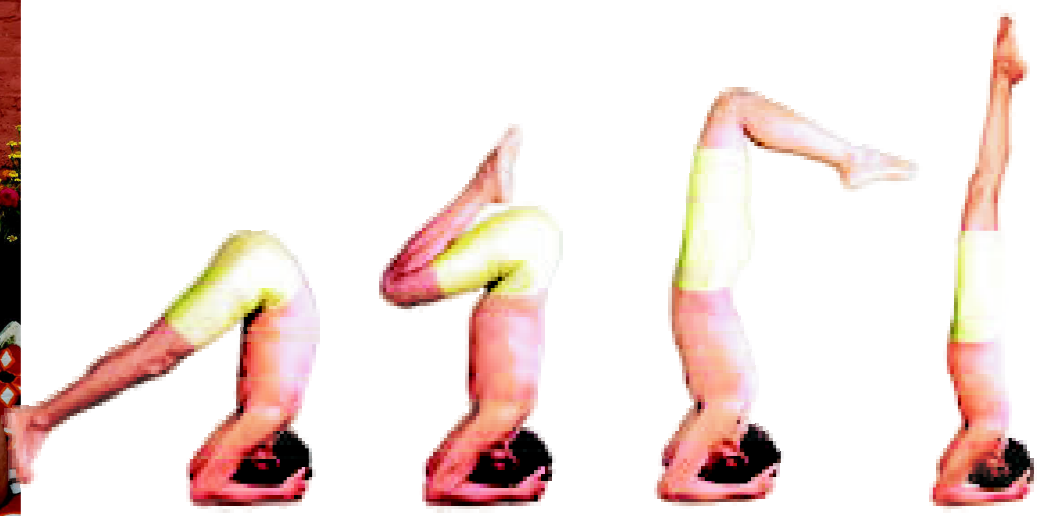

मिशन हलचल

ऑनलाइन परीक्षा- 2020

शिक्षण संवाद

बड़ा संघर्ष, बड़ी सफलता का इतिहास रचता है। ऐसा ही कुछ प्रयास **Covid-19** के चलते लॉकडाउन में बच्चों से अधिकतम सम्पर्क एवं शिक्षण की कोशिश के रूप में मिशन शिक्षण संवाद द्वारा नियमित शिक्षण अभ्यास प्रश्न तैयार करके भेजकर किया जाता रहा जिनकी ऑनलाइन परीक्षा दिनांक 21 एवं 22 मई 2020 को संपूर्ण उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों में कराई गयी। परीक्षा 22 मई 2020 को शाम 5 बजे समाप्त हुई।

ऑनलाइन परीक्षा के आँकड़े

ऑनलाइन परीक्षा में कुल 60197 बच्चों ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया जिसमें– प्राथमिक स्तर से कुल 32936 बच्चों ने प्रतिभाग किया। इसमें परिषदीय विद्यालयों उ०प्र० व राजकीय विद्यालयों के 30427 व 2509 अन्य विद्यालयों के बच्चे शामिल हुए।
उच्च प्राथमिक स्तर से कुल 27261 बच्चों ने प्रतिभाग किया। इसमें परिषदीय विद्यालयों उ०प्र० व राजकीय विद्यालयों के 22631, कस्तूरबा विद्यालयों के 2089 व 2541 अन्य विद्यालयों के बच्चे शामिल हुए।

ऑनलाइन परीक्षा में सफल–उत्तीर्ण बच्चों को ई–सर्टिफिकेट मिशन शिक्षण संवाद द्वारा जारी किया गया। इस परीक्षा का मुख्य उद्देश्य बताते हुए टीम मिशन शिक्षण संवाद की ओर से हेमरतन दक्ष ने बताया कि वर्तमान परिस्थितियों में सरकारी विद्यालय के बच्चों तक संसाधनों के अभाव में पहुँचना बहुत मुश्किल है लेकिन कुछ नहीं से कुछ सही सिद्धांत के रूप में प्रयास करते हुए बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण से जोड़ना तथा उनकी तकनीकी शिक्षण में अभिरुचि उत्पन्न करना है। साथ ही जो मिशन शिक्षण संवाद द्वारा गृह कार्य–अभ्यास कार्य कराया गया उसका फीडबैक इस ऑनलाइन परीक्षा के माध्यम से प्राप्त करना है। बच्चों ने बड़े ही उत्साह से इस परीक्षा को घर पर रहकर देते हुए आनंद का अनुभव किया और नई विधा से परिचित हुए। यह

अनुभव हम शिक्षकों के लिए भी एक नई दिशा में कार्य करने एवं अनुभव के रूप में सामने आया है।

कोविड–19 जहाँ अनेकों समस्याएँ लेकर आया है वहीं उनसे लड़ने और कुछ नया सीखने का अनुभव भी प्रदान करने वाला रहा। निश्चित ही यह महामारी जल्द से जल्द इस देश दुनिया से विदा हो, लेकिन इसके द्वारा सिखाए गए सिद्धांतों का हम सब पालन करें तथा नए आयामों को स्थापित कर सकें। शिक्षा के क्षेत्र पर हम अब एक नया आयाम स्थापित करने के लिए अग्रसर हैं। अब बच्चों की पढ़ाई किसी भी प्रकार बाधित न हो, इसलिए जल्द ही टीम शिक्षण सामग्री को एकत्र कर बच्चों तक पहुँचा रही है।

टीम मिशन शिक्षण संवाद की ओर से ऑनलाइन परीक्षा में सभी सफल विद्यार्थियों को, पूरी टीम व सभी सहयोगी साथियों को बहुत बहुत शुभकामनाएँ व बधाई।

सफलता एक यात्रा है कोई आखिरी मंजिल नहीं.....

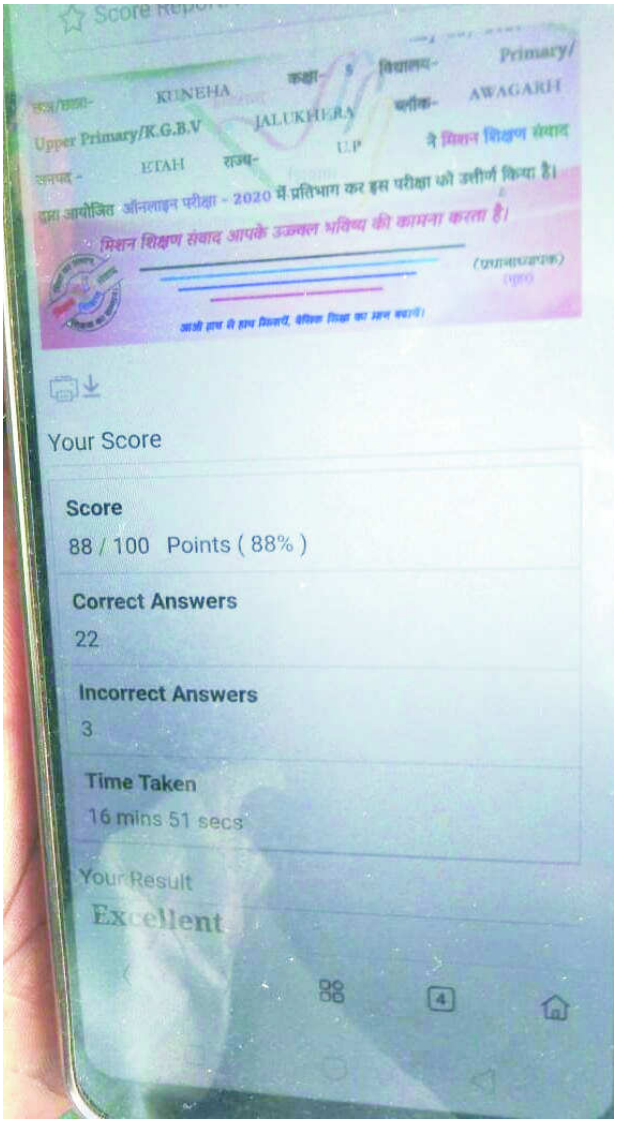

शिक्षण तकनीकी

शिक्षण संवाद

सम्मानित समस्त शिक्षक बंधुओ मैं आज आपको एक ऐसे एप्प के बारे में बताने जा रहा हूँ जो शिक्षक बंधुओं को शिक्षण कार्य में सरलता प्रदान करेगा। इस एप्प के द्वारा बच्चों को विभिन्न भाषाओं जैसे हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, तेलगु, बांग्ला, मराठी आदि को पढ़ाने में सहायता प्रदान करेगा। अतः मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरी यह छोटी सी जानकारी आप सभी को शिक्षण कार्य में कुछ मदद प्रदान कर सके। एप्प के बारे में –

1. एप्प का नाम – **BOLO** एप्प
2. कैसे डाउनलोड करना है – सर्वप्रथम आपको अपने एंड्राइड फोन के गूगल प्ले स्टोर आइकन पर क्लिक करके सर्च ऑप्शन में जाकर **BOLO** टाइप करके सर्च करना है इसके बाद एप्प को इंस्टाल करना है।
3. एप्प लिंक – https://play.google.com/store/apps/details?id=com.google.android.apps.seekh
4. प्रयोग के तरीके – 1. एप्प इंस्टॉल करने के बाद होमपेज के **BOLO** एप्प के आइकन पर क्लिक करना है।

2. उस भाषा को चुनना है जो आप बच्चों को पढना चाहते हों फिर नेक्स्ट बटन पर क्लिक करना है।
3. लिखी हुई लाइन को रिया की मदद के साथ पढ़ना है और नेक्स्ट बटन पर क्लिक करना है।
4. अभिभावकों एवम शिक्षकों हेतु जरूरी बातें, नेक्स्ट पर क्लिक करना है।
5. लाइब्रेरी में भाषा के बदलने के साथ कहानी पर क्लिक करना है और माइक की परमीशन देनी है और कहानी को बोलकर पढ़ना है।
6. सही शब्द पढ़ने पर नीला और न पढ़ने पर लाल शब्द हो जाता है कठिन शब्द के ऊपर क्लिक करने पर रिया उस शब्द को पढ़ कर बता देती है। सही शब्द पढ़ने पर रिया बच्चों को उत्साहित भी करती है।
5. एप से लाभ – एप्प से लाभ अनेक हैं जैसे –

1. इस एप्प के द्वारा बच्चों को पढ़ाई के प्रति रुचि उत्पन्न होती है।
2. चूँकि बच्चों को मोबाइल से खेलना पसन्द होता है इस एप्प से वे खेल भी लेते हैं और पढ़ाई भी हो जाती है।
3. शिक्षकों और अभिभावकों को भी बहुत मदद मिलती है।
4. इस एप्प का प्रयोग घर में स्कूल में कहीं भी किया जा सकता है।
5. रिया (एप्प असिस्टेंट) के मोटिवेशन से बच्चे खुशी–खुशी अपना टास्क पूरा करते हैं। अतः इस एप्प से बहुत से लाभ हैं।

कृष्ण गोपाल अग्निहोत्री,
इं0 प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय पुर्वा बले,
विकास खण्ड–भाग्यनगर, जनपद–औरैया।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद